मूल्य ₹ 75

दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

जनवरी – फरवरी, 2018

दुधारू पशुओं के स्वास्थ्य पर विशेष सामग्री

दूध क्रांति से आमदनी में सुधार

www.indairyasso.org

गोकुळ®

एक दुग्ध सरिता...

"जो बहती है गहरे सागर की तरफ,
चल पड़ती है संपन्नता की ओर
दूध उत्पादक एवम् किसानों को लेकर ।"

विविध पुरस्कारों से सम्मानित...

राष्ट्रीय उत्पादकता पुरस्कार : १४ बार

महाराष्ट्र राज्य सहकार भूषण पुरस्कार : ३ बार

महाराष्ट्र ऊर्जा विकास अभिकरण (महाऊर्जा) पुरस्कार : ४ बार

डी. व्ही. घाणेकर
(कार्यकारी संचालक)

संचालक मंडळ

विश्वास नारायण पाटील (आबाजी)
(चेअरमन)

कोल्हापूर जिल्हा सहकारी दूध उत्पादक संघ मर्यादित, कोल्हापूर.

बी - १, एम. आय. डी. सी. गोकुळ शिरगाव, कोल्हापूर ४१६ २३४. फोन : ०२३१-२६७२३११ ते १५ फॅक्स : २६७२३७४
E-mail : mktg@gokulmilk.coop | sales@gokulmilk.coop | Website : www.gokulmilk.coop

Genesis Comm.

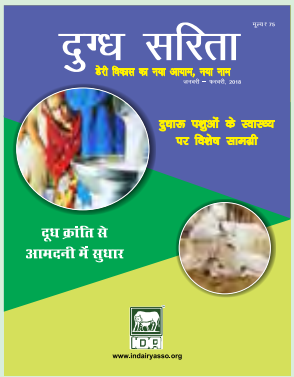

आवरण चित्र सौजन्यः एनडीडीबी

दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका

वर्ष : 2 अंक : 1 जनवरी–फरवरी 2018

संपादन सलाहकार समिति

अध्यक्ष
श्री अरुण दत्तात्रय नरके
अध्यक्ष
इंडियन डेरी एसोसिएशन

उपाध्यक्ष
डा. अनिल कु. श्रीवास्तव
अध्यक्ष
कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल

सदस्य

डॉ. रामेश्वर सिंह
कुलपति
बिहार पशु विज्ञान एवं पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय

श्री रामचंद्र चौधरी
अध्यक्ष
अजमेर जिला दुग्ध सहकारी संघ लिमिटेड

डॉ. इन्द्रजीत सिंह
निदेशक
केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान

श्री विश्वास चितले
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
चितले डेरी

डॉ. आर. आर. बी. सिंह
निदेशक
राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान

डॉ. अनूप कालरा
कार्यकारी निदेशक
आयुर्वेट लिमिटेड

संपादक मंडल

प्रकाशक
श्री नरेश कुमार भनोट

निदेशक
सुश्री सीमा सहाय

संपादक
डॉ. जगदीप सक्सेना

विज्ञापन व व्यवसाय
श्री नरेन्द्र कुमार पांडे

संपर्क
इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सैक्टर–IV,
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022
फोन : 011-26179781
ईमेल : dsarita.ida@gmail.com

नव वर्ष 2018 की हार्दिक शुभकामनाएं

विषय सूची

अध्यक्ष की बात, आपके साथ 4

मुख्य लेख
दुधारू पशुओं की बेहतर उत्पादकता के लिए प्रभावी एवं संपूर्ण कृमिनाशन 8
हेमन्त कुमार पन्त

जानकारी
पशु रोगों से बचाव–टीकाकरण कैलेंडर 12
संजय कुमार, कौशलेन्द्र कुमार एवं रजनी कुमारी

सलाह
यूरिया के उपचार से पशु चारे को अधिक पोषक बनाएं 14
कौशलेन्द्र कुमार, संजय कुमार एवं रवि रंजन कुमार सिन्हा

नई तकनीक
पशु प्रजनन की समस्याओं का समाधान, कारगर एप्प से 16
रूपसी तिवारी एवं त्रिवेणी दत्त

रिपोर्ट
आईडीए के जागरूकता अभियानों से चली नई लहर 20
संपादकीय डेस्क

सीख
दुधारू पशुओं में गरमी को पहचानें 23
संजय कुमार, कौशलेन्द्र कुमार एवं रजनी कुमारी

ऑनलाइन
ई–पशु हाटः आमदनी बढ़ाने वाला नया नेटवर्क 27
सीमा चोपड़ा

प्रश्नोत्तरी
दुधारू पशुओं में ब्रुसेलोसिसः रोकथाम एवं उपचार 30
मनोज कुमार

सफलता गाथा
डेरी प्रसंस्करण ने संवारा बलदेव सिंह का जीवन 33
गोपिका तलवार, रेखा चावला, संतोष कुमार मिश्रा एवं अनिल कुमार पुनिया

डिस्क्लेमर

लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों, जानकारियों, आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं, उनसे आईडीए की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्री का कॉपीराइट अधिकार आईडीए के पास सुरक्षित है। इन्हें पुनः प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य
एक प्रति : 75 रु.

इंडियन डेरी एसोसिएशन

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) भारत के डेरी सेक्टर का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष संस्था है। सन् 1948 में गठित इस संस्था ने देश को विश्व में सर्वाधिक दूध उत्पादन के शिखर तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभायी है। वर्तमान में इसके 3,000 से अधिक सदस्य हैं, जिनमें वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, डेरी उद्यमी, डेरी किसान, पशुपालक और डेरी के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने वाले डेरी कर्मी शामिल हैं। आईडीए द्वारा राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर ज्वलंत विषयों पर सम्मेलन, संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिसकी सिफारिशों पर भारत सरकार द्वारा गंभीरता से विचार किया जाता है। आईडीए का मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में कार्यरत हैं। साथ अनेक राज्यों में इसके चैप्टर भी सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। डेरी सैक्टर के सभी संबंधितों तक शोध परक व तकनीकी जानकारी और उपयोगी सूचनाओं के प्रसार के लिए आईडीए द्वारा पिछले लगभग सात दशकों से 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' और 'इंडियन डेरीमैन' का प्रकाशन किया जा रहा है। ये दोनों ही पत्रिकाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं। द्विमासिक हिन्दी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन आईडीए की नयी पहल है।

आईडीए के पदाधिकारी

अध्यक्षः श्री अरूण नरके

उपाध्यक्षः डॉ. जी.एस. राजोरिया एवं डॉ. सतीश कुलकर्णी

सदस्य

चयनितः डॉ. जी. आर. पाटिल, डॉ. राजा रत्तिनम, डॉ. आर.एस. खन्ना, श्री अरूण पाटिल, डॉ. के.एस. रामचन्द्र, श्री पार्थिभाई जी. भटोल, श्री एम.पी. एस. चढ्ढा, डॉ. जे.वी. पारेख, डॉ. एस. के. कनौजिया, श्री सुधीर कुमार सिंह एवं श्री किरीट के. मेहता **नामित सदस्यः** श्री अनिमेष बनर्जी, श्री एस.एस. मान, डॉ. आर. चट्टोपाध्याय, श्री सी.पी. चार्ल्स, श्री सुभाष चंद्र मंडगे, डॉ. ई. रमेश कुमार, डॉ. आर.आर.बी. सिंह एवं श्री संग्राम आर. चौधरी **विशेष आमंत्रित सदस्यः** सुश्री किरण कुमारी एवं श्रीमती स्नेहलता बिपिनदादा कोल्हे

सम्पादकीय मंडल

अध्यक्षः श्री अरूण नरके; **उपाध्यक्षः** डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव; **सदस्यः** श्री ए.के. खोसला, डॉ. आर.एम. आचार्य, डॉ. किरण सिंह, डॉ. जी.एस. राजोरिया, डॉ. जी. आर. पाटिल, डॉ. शिव प्रसाद, डॉ. ए.के. सिंह, डॉ. ए.के. त्यागी, **कार्यकारी सम्पादक, आईजेडीएसः** डॉ. आर.के. मलिक **सम्पादक, इंडियन डेरीमैनः** श्रीमती सीमा सहाय, **सम्पादक, दुग्ध सरिताः** डॉ. जगदीप सक्सेना

मुख्य कार्यालयः इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए भवन, सेक्टर– IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली– 110022, टेलीफोनः 26170781, 26165237, 26165355, फैक्स – 91–11–26174719, ई–मेलः idahq@rediffmail.com, www.indairyasso.org

क्षेत्रीय शाखाएं एवं चैप्टर्स

दक्षिणी क्षेत्रः श्री सी.पी. चार्ल्स, अध्यक्ष, आईडीए भवन, एनडीआरआई परिसर, अडुगोडी, बेंगलुरू–560 030, फोन न. 080–25710661, फैक्स–080–25710161. **पश्चिम क्षेत्रः** श्री अरूण पाटिल, अध्यक्ष; ए–501, डाइनैस्टी बिजनेस पार्क, अंधेरी–कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई–400059 ई–मेलः arunpatilida@gmail.com **उत्तरी क्षेत्रः** श्री एस.एस. मान, अध्यक्ष; आईडीए हाउस, सेक्टर IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110 022, फोन– 011–26170781, 26165355. **पूर्वी क्षेत्रः** डॉ. आर. चट्टोपाध्याय, अध्यक्ष, द्वारा एनडीडीबी, ब्लॉक–डी, के सेक्टर–II, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता– 700 091, फोन– 033–23591884–7. **गुजरात राज्य चैप्टरः** डॉ. के. रत्तिनम, अध्यक्ष; द्वारा एसएमसी डेयरी विज्ञान कॉलेज, आणद कृषि विश्वविद्यालय, आणद– 388110, गुजरात, ई–मेलः guptahk@rediffmail.com **केरल राज्य चैप्टरः** डॉ. पी. आई. गीवर्गीज़, अध्यक्ष, प्रोफेसर एवं प्रमुख तथा पूर्व डीन, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, मन्नुथि, त्रिसूर–680651, फोन–0487–2372861, फैक्स–00487–2372855, ई–मेलः idakeralachapter@gmail.com **राजस्थान राज्य चैप्टरः** श्री ललित कुमार कौशिक, अध्यक्ष, द्वारा जयपुर डेयरी, गांधीनगर रेलवे स्टेशन के पास, जयपुर– 302015, टेलीफोन नं. 9549653400, फैक्स 0141–2711075, ई–मेलः idarajchapter@yahoo.com **पंजाब राज्य चैप्टरः** श्री इन्द्रजीत सिंह, अध्यक्ष; निदेशक कार्यालय, डेयरी विकास, एससीओ नं. 1106–07, सेक्टर–22बी, चंडीगढ़ फोन/फैक्सः 0172–2700055, ई–मेलः director_dairy@rediffmail.com **बिहार राज्य चैप्टरः** श्री एस.के. सिंह, अध्यक्ष, प्रबंध निदेशक, पटना डेयरी कार्यक्रम, वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, फीडर बैलेन्सिंग डेयरी कॉम्प्लेक्स, फुलवारीशरीफ, पटना–01505. ई–मेलः sudhirpdp@yahoo.com **हरियाणा राज्य चैप्टरः** श्री ए.के. शर्मा, अध्यक्ष, (नामित); द्वारा निदेशक, एनडीआरआई, करनाल, 132001. टेलीफोनः 0184–2259002, 2252800. ई–मेलः dir@ndri.res.in **तमिलनाडु राज्य चैप्टरः** डॉ. सी. नरेश कुमार, अध्यक्ष, को/ओ. प्रोफेसर एवं प्रमुख (सेवानिवृत्त), डेयरी विज्ञान विभाग, मद्रास पशुचिकित्सा कॉलेज, चेन्नई–600 007. **आंध्र प्रदेश राज्य चैप्टरः** श्री के. भास्कर रेड्डी, अध्यक्ष; प्रबंध निदेशक, क्रीमलाइन डेयरी प्रॉडक्ट्स लिमिटेड, 6–3–1238/बी/21, आसिफ एवेन्यू, राज भवन रोड, सोमाजीगुडा, हैदराबाद–500 082. फोनः 040–23412323, फैक्सः 040–23323353. **पूर्वी यूपी स्थानीय चैप्टरः** प्रोफेसर डी.सी. राय, अध्यक्ष, प्रोफेसर, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रमुख, पशुचिकित्सा एवं प्रौद्योगिकी, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी–221005, फोनः 0542–6701774/2368583, फैक्सः 0542–2368009, ई–मेलः dcrai.bhu@gmail.com

DeLaval

Speedline Parlour with pit

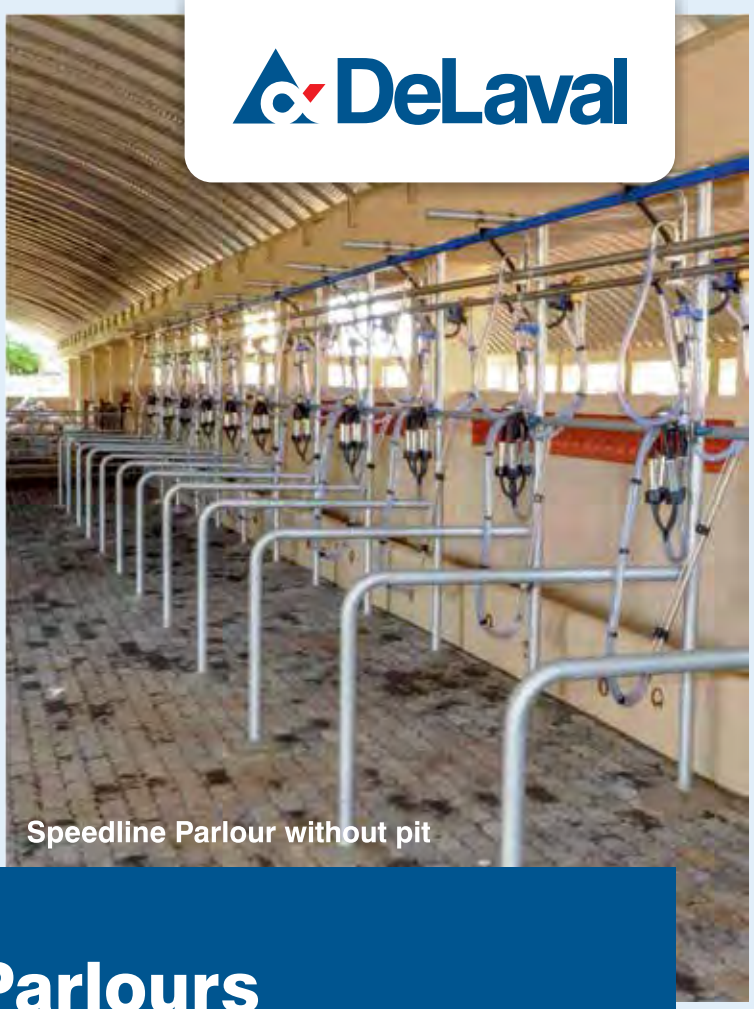

Speedline Parlour without pit

DeLaval Speedline Parlours

Compact and Affordable Mechanized Milking Systems

Solution for
50-100 animal farm

Bucket Milking Cow

Herringbone Parlour

Bulk Milk Cooler

Mixer Wagon

Swinging Cow Brush

We live milk

DeLaval Private Limited
A-3, Abhimanshree Society,
Pashan Road, Pune - 411008, India.
Tel. +91-20-6721 8200 | Fax +91-20-6721 8222
Email: marketing.india@delaval.com
Website: www.delaval.in

100 Years of Milking Excellence 1917 - 2017
Celebrating journey of 25 years in India

अध्यक्ष की बात, आपके साथ

यादगार रहा बीता साल

प्रिय पाठकों,

आज जब गुज़रे साल पर नज़र डालता हूं तो अनेक यादगार पल आंखों के सामने आ जाते हैं और सब कुछ ऐसा लगता है, जैसे कल की बात हो। मैंने जनवरी, 2017 में आईडीए के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी संभाली थी और तब से लगातार यह प्रयास रहा कि देश में डेरी किसानों की सामाजिक–आर्थिक दशा को सुधारा जाए, मज़बूत किया जाए, और इसमें मुझे आईडीए के सदस्यों, आईडीए मुख्यालय के कर्मचारियों और सभी ज़ोन्स तथा चैप्टर्स के पदाधिकारियों तथा कर्मचारियों का भरपूर सहयोग मिला। यही वजह है कि हम कम समय में एक संगठित टीम की तरह काम करके डेरी किसानों तथा डेरी व्यवसाय की समृद्धि के लिए काफी कुछ हासिल कर सके।

इसमें शायद सबसे प्रमुख है इस पत्रिका यानी 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन शुरू करना। आप सब जानते हैं मैं हृदय से किसान हूं, इसलिए मैंने महसूस किया कि डेरी किसानों तक वैज्ञानिक जानकारी पहुंचाने के लिए एक ऐसी पत्रिका होनी चाहिए, जो उनसे उनकी भाषा में संवाद कर सके। मुझे खुशी है कि इस पत्रिका को आप सभी के सहयोग से बहुत कम समय में तैयार करके 9 सितंबर, 2017 को विमोचित किया गया। भारत में श्वेत क्रांति के जनक डॉ. वर्गीज़ कुरियन को उनकी पांचवीं पुण्य तिथि पर यह हमारी एक विनम्र श्रद्धांजलि थी। 'दुग्ध सरिता' को लगातार सभी संबंधितों और विशेषरूप से डेरी किसानों से सराहना तथा प्रशंसा मिल रही है। अनेक डेरी सहकारी संघ और मिल्क यूनियन ने बड़ी संख्या में अपने सदस्यों के लिए इसकी सदस्यता ली है।

हमने डेरी किसानों, डेरी उद्यमियों और डेरी व्यवसाय के लिए समान रूप से विकास कार्य किये। 'फार्मर्स फोरम' और 'इंडस्ट्रियल फोरम' की बैठकें सही समय पर आयोजित की गईं जिनमें संबंधित विचार–विमर्श द्वारा आगे की रणनीति तय की गई और चुनौतियों का समाधान पेश करने की कोशिश की गई। इसी संदर्भ में मुझे याद आता है कि आईडीए ने डेरी से संबंधित राष्ट्रीय मुद्दों पर सभी संबंधितों के साथ विचारों का आदान–प्रदान करने के लिए बैठकें आयोजित कीं और सिफारिशों को भारत सरकार के सामने रखा। जीएसटी के लागू होने से पहले हमने बैठक करके सरकार के पास प्रस्ताव भेजा कि दूध और दूध के उत्पादों को जीएसटी के दायरे से मुक्त रखा जाए। इसी तरह आम बजट के पहले भी हमने डेरी विकास को बढ़ावा देने वाली सिफारिशें भारत सरकार के पास भेजीं। सन् 2022 तक किसानों की आमदनी दुगुनी करने

के संकल्प को साकार करने में डेरी अहम् भूमिका निभा सकती है। हमने यह बात भारत सरकार तक पहुंचायी, जिसका नतीजा यह हुआ कि इस संबंध में गठित इंटर–मिनिस्टीरियल कमेटी के सब–ग्रुप में आईडीए के प्रतिनिधियों को भी जगह मिली। इस तरह हम डेरी विकास की बात सही माध्यम से सही मंच तक पहुंचाने में कामयाब रहे।

विश्व दुग्ध दिवस, 2017

प्रिय पाठकों, इस समय आइडीए में 8–10 फरवरी, 2018 को कोझिकोड में आयोजित की जाने वाली डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस की तैयारियां जोरों पर हैं। मुझे याद आता है कि पिछले वर्ष इस महत्वपूर्ण कांफ्रेंस का आयोजन 16–18 फरवरी, 2017 को मुबंई में किया गया था। समस्त डेरी समुदाय के सहयोग और शुभकामनाओं से हमने इसका सफल आयोजन किया। मैं अपनी ओर से वर्तमान कांफ्रेंस का आयोजन करने वाली आईडीए (साऊथ ज़ोन) की टीम को इसकी कामयाबी के लिए शुभकामनाएं देता हूं और आशा करता हूं कि इसका आयोजन डेरी किसानों तथा डेरी उद्योग के लिए समान रूप से हितकारी होगा।

आईडीए मुख्यालय और इसके ज़ोनल कार्यालयों में 1 जून को विश्व दुग्ध दिवस और 26 नवंबर को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस को जोश से मनाने की परंपरा है। आईडीए की पहल और प्रयासों से आज इन दोनों दिवसों पर पूरे भारत में जगह–जगह विशेष आयोजन किये जाते हैं। मुझे प्रसन्नता है कि बीते वर्ष इन दोनों ही आयोजनों में मुझे अध्यक्षता करने का अवसर मिला। विश्व दुग्ध दिवस मैंने आईडीए मुख्यालय, नई दिल्ली में अपने साथियों के साथ मनाया, जबकि राष्ट्रीय दुग्ध दिवस आईडीए के वेस्ट ज़ोन, मुंबई कार्यालय में मनाने पर विशेष खुशी हुई। विशेष इसलिए कि इस सुंदर और भव्य भवन का बीते वर्ष मेरे हाथों से ही उद्घाटन हुआ है। मेरा लगातार प्रयास रहा कि आईडीए प्रगति और उन्नति की राह पर आगे बढ़ता रहे। मुझे यह बताते हुए खुशी है कि इस वर्ष इसके सदस्यों की संख्या में रिकॉर्ड बढ़ोतरी हुई और अब यह संख्या लगभग 3,500–4,000 के बीच पहुंच चुकी है। आईडीए मुख्यालय को भी नये सिरे से बनाने और सजाने–संवारने का काम तेजी से जारी है। साथ ही हम इसे अधिक सुविधा संपन्न भी बनाने जा रहे हैं। इसका लाभ पूरे देश से आने वाले सदस्यों और मेहमानों को भी मिलेगा।

आज जब आईडीए के अध्यक्ष के रूप में मेरा कार्यकाल समाप्त हो रहा है तो मैं हृदय से आप सभी को धन्यवाद कहना चाहता हूं और आपके सहयोग तथा सहायता के लिए आभार प्रकट करता हूं। यदि आप सब मेरे साथ खड़े नहीं होते तो इतने कम समय में हम इतना कुछ हासिल नहीं कर पाते। लेकिन मुझे पता है कि अभी बहुत कुछ करना बाकी है, अभी मीलों लंबा सफर तय करना है। मुझे पूरी आशा और विश्वास है कि आईडीए के नये अध्यक्ष इस विकास यात्रा को और अधिक कुशलता तथा दृढ़ता से आगे बढ़ाएंगे। मेरी शुभकामनाएं उनके साथ हैं। विदाई के इस पल में मैं अपने सभी पाठकों को सुख, समृद्धि तथा असीम प्रसन्नता के लिये नये वर्ष की बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

आपका

(अरुण दत्तात्रय नरके)

इंडियन डेरी एसोसिएशन

संस्थागत सदस्य

बेनीफैक्टर सदस्य

अहमदाबाद जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, अजमेर (राजस्थान)
अमृत फ्रेश प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)
आयुर्वेट लिमिटेड (दिल्ली)
आरोहण डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, तंजावुर (तमिलनाडु)
बीएआईफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन, पुणे (महाराष्ट्र)
बनासकांठा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पालनपुर (गुजरात)
बड़ौदा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)
बेलगांव जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक सोसायटी संघ लिमिटेड, बेलगांव (कर्नाटक)
बेनी इमपेक्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ, भीलवाड़ा (राजस्थान)
बिहार राज्य दुग्ध सहकारिता संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)
बिमल इंडस्ट्रीज, यमुना नगर (हरियाणा)
बोवियन हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)
ब्रिटानिया डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)
चंबल डेयरी उत्पाद, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
सीपी दुग्ध और खाद्य उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
क्रीमी फूड्स लिमिटेड (दिल्ली)
डेयरी क्राफ्ट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
डीएसएम न्यूट्रिशनल प्रोडक्ट्स, मुंबई (महाराष्ट्र)
डेनफोस इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)
डेयरी विकास विभाग टीवीएम, तिरुवनंतपुरम (केरल)
देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद डीयूएसएस लिमिटेड, बेगूसराय (बिहार)
डोडला डेयरी लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
द्वारका मिल्क एंड मिल्क प्रोडक्ट्स लिमिटेड, नवी मुंबई (महाराष्ट्र)
इली लिली एशिया इंक, बेंगलुरु (कर्नाटक)
फार्मगेट एग्रो मिल्क प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
किसान प्रशिक्षण केन्द्र, डेयरी विकास, रांची (झारखंड)
खाद्य और बायोटेक इंजीनियर्स (I) प्राइवेट लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)
फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी, आणंद (गुजरात)
फोंटेरा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
गरिमा मिल्क एंड फूड्स प्रोडक्ट्स लिमिटेड (दिल्ली)
गोविंद दुग्ध और दुग्ध उत्पाद लिमिटेड, सतारा (महाराष्ट्र)
जीईए वेस्टफालिया सेपरेटर (ई) प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
गांधीनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, गांधीनगर (गुजरात)
गोमा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे (महाराष्ट्र)
गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लिमिटेड, आंणद (गुजरात)
जीआरबी डेयरी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, होसुर (तमिलनाडु)
एचसीएल इन्फोसिस्टम्स लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)
हेटसन कृषि उत्पाद लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)
हसन दुग्ध संघ, हसन (कर्नाटक)
हिंदुस्तान इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर (मध्य प्रदेश)
आईडीएमसी लिमिटेड, आणंद (गुजरात)
इग्लू डेयरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
आईटीसी फूड्स, बेंगलुरू, (कर्नाटक)
भारतीय संभार एवं सामग्री प्रबंधन रेल संस्थान (दिल्ली)
जयपुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)
कान्हा दुग्ध परीक्षण उपकरण प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
कस्तूरबा जैव–उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)
करनाल दुग्ध उत्पाद लिमिटेड (दिल्ली)
करीमनगर जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)
कर्नाटक सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)
ख़ैबर एग्रो फार्म्स प्राइवेट लिमिटेड, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर)
खम्बेत कोठारी कैन्स एवं सम्बद्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, जलगांव (महाराष्ट्र)
क्वालिटी डेयरी इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली (दिल्ली)
कोलेनमेसे या ट्रेडफेयर प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
कोल्हापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (महाराष्ट्र)
कच्छ जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कच्छ (गुजरात)
लार्सन एंड टूब्रो इन्फोटेक लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
मध्य प्रदेश राज्य सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, भोपाल (मध्य प्रदेश)
मालाबार क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कोझीकोड (केरल)
मालगंगा डेयरी फार्म, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (बिहार)
एनसीडीएफआई, आंणद (गुजरात)
राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, आणंद (गुजरात)
भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, सोनीपत (हरियाणा)
नोवोजाइम्स दक्षिण एशिया प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)
नाऊ टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
ओराना इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)
पाली जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पाली (राजस्थान)
परम डेयरी लिमिटेड (दिल्ली)
पराग दुग्ध खाद्य प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)
प्रादेशिक सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
प्रिया दुग्ध और दुग्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
पी पी जी (दिल्ली)
प्रभात डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

संस्थागत सदस्य

रायचूर बेल्लारी एवं कोप्पल जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, बेल्लारी (कर्नाटक)
राजारामबापू पाटिल सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, सांगली (महाराष्ट्र)
राजस्थान सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)
एसआर थोराट दुग्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
स्टर्लिंग एग्रो इंडस्ट्रीज लिमिटेड (दिल्ली)
सिनर्जी एग्रो–टेक प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)
साबरकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, हिम्मतनगर (गुजरात)
सील्ड एयर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
श्राइबर डायनामिक्स डेयरीज लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
सीरप (एसईआरएपी) इंडस्ट्रीज (दिल्ली)
श्री भावनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
श्री गणेश एग्रो वेट कार्पोरेशन, नवसारी (गुजरात)
श्री विजयविशाखा दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)
श्री राजेश्वरी डेयरी उत्पाद उद्योग प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
स्टर्न इन्ग्रेडिएन्ट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
एसएसपी प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)
सोलापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक व प्रक्रिया संघ मर्यादित (महाराष्ट्र)
शिमोगा सहकारी दुग्ध उत्पादक सोसाइटीज़ संघ लिमिटेड, शिमोगा (कर्नाटक)
टेट्रा पैक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)
कृष्णा जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारी संघ लिमिटेड, विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश)
पटियाला जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पटियाला (पंजाब)
पंजाब राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, चंडीगढ़ (पंजाब)
रोहतक सहकारी दुग्ध उत्पादक लिमिटेड, रोहतक (हरियाणा)
रोपड़ जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, मोहाली (पंजाब)
संगरूर जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (पंजाब)
उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)
उत्तर प्रदेश दीन दयाल उपाध्याय पशु विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय, मथुरा (उत्तर प्रदेश)
उमंग डेयरीज लिमिटेड (दिल्ली)
वलसाड जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, नवसारी (गुजरात)
वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)
विद्या डेयरी, आणंद (गुजरात)
विर्बक पशु स्वास्थ्य इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
ज्यूजर इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)
पायस मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)
पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड, हरिद्वार (उत्तराखंड)

वार्षिक सदस्य

एबीटी उद्योग, कोयंबटूर (तमिलनाडु)
एबॉट हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
अमृत खाद्य, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
भरूच जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
बी.जी. चितले डेयरी, सांगली (महाराष्ट्र)
कोरोनेशन वर्थ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
क्रीमलाइन डेयरी उत्पाद लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
सीएचआर हेन्सन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
डीलावेल प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)
गोमती सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, अगरतला
आईसीएल प्रबंधन एवं व्यापार इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)
भारतीय इम्युनोलॉजिकल्स लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)
ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, आणंद (गुजरात)
जिंदल स्टेनलेस कॉर्पोरेट प्रबंधन सेवा प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
जम्मू व कश्मीर दुग्ध उत्पादक सहकारिता लिमिटेड
जेएमडी सोनिक इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
कैरा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, आणंद (गुजरात)
ख़ैबर एग्रो फार्म प्राइवेट लिमिटेड, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर)
माही दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, राजकोट (गुजरात)
मैगनाम नेटलिंक प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)
मिशेल जेनज़िक एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड, इटावा (उत्तर प्रदेश)
मॉडर्न डेयरीज लिमिटेड, करनाल (हरियाणा)
ऑटोकम्पू इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (नई दिल्ली)
पीएमएस इंजीनियर्स (इंटरनेशनल) सेवा (दिल्ली)
राजकोट जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
रेड काऊ डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, हुगली (पश्चिम बंगाल)
रिनैक इंडिया लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)
सह्याद्रि कृषि उत्पाद और डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)
संगम दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, गुंटूर (आंध्र प्रदेश)
शारदा डेयरी एवं खाद्य उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, रायपुर (छत्तीसगढ़)
साइंटिफिक एंड डिजिटल सिस्टम्स (दिल्ली)
सीता राम गोकुल मिल्क्स केटीएम लिमिटेड, काठमांडू (नेपाल)
शेंदोंग बिहाई मशीनरी कंपनी लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)
एसपी मणि एंड मोहन डेयरी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (तमिलनाडु)
शिरीष पॉलीकेम प्राइवेट लिमिटेड, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
श्री एडीटिव्स (पी एंड एफ) लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)
श्री ममता दुग्ध डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, जालोर (राजस्थान)
श्रीकृष्णा दुग्ध प्राइवेट लिमिटेड, हुबली (कर्नाटक)
श्रीचक्र दुग्ध उत्पाद एलएलपी (आंध्र प्रदेश)
सूरत जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
अंबाला जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (हरियाणा)
तिरुवनंतपुरम क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (केरल)
मेसे म्यूनशेन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
वर्ल्ड ऐनीमल प्रोटेक्शन, नई दिल्ली

दुधारू पशुओं की बेहतर उत्पादकता के लिए

प्रभावी एवं संपूर्ण कृमिनाशन

हेमन्त कुमार पन्त
वरिष्ठ पशुचिकित्सा अधिकारी
पशुपालन विभाग, राजस्थान
अलवर

कृमि अर्थात परजीवी अथवा परपोषी, जैसा कि नाम से स्पष्ट है, ऐसे जीव हैं जो दूसरे शरीर से अपना पोषण प्राप्त करते हैं। ये परजीवी शरीर के बाहर भी पाए जा सकते हैं और भीतर भी। शरीर के भीतर पाए जाने वाले परजीवियों को अंतःपरजीवी कहा जाता है। अंतःपरजीवी विभिन्न प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न कर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से पशु शरीर को क्षति पहुंचाते हैं तथा पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन को अत्यंत गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं, जिससे पशुपालक को आर्थिक हानि होती है। पशुधन पर इन परजीवियों के कुछ महत्वपूर्ण दुष्प्रभाव इस प्रकार हैं।

- अधिकांश अंतः परजीवी पशुधन के पाचन तंत्र को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं और पशु अपच का शिकार हो जाता है। पशु सही ढंग से चारा नहीं खाता, दस्त से ग्रस्त हो सकता है और गोबर बदबूदार हो सकता है।
- परजीवियों से पीड़ित पशु की शारीरिक स्थिति बिगड़ने लगती है, पशु कमजोर हो जाता है, उसके शरीर भार एवं वृद्धि दर पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। छोटे बछड़े–बछड़ियों में अंतःपरजीवी बहुधा मौत का कारण भी बन जाते हैं।

डेरी पशुओं में कृमिनाशन पशुपालन व्यवसाय में एक ऐसी महत्वपूर्ण गतिविधि है, जिसे वर्षों से पशु चिकित्सकों एवं पशुपालकों द्वारा व्यापक रूप से अपनाया जा रहा है, परंतु अत्यंत अनियंत्रित ढंग से। दवा बाजार आज अनेक अंतः कृमिनाशक औषधियों से अटा पड़ा है, परंतु इन औषधियों का बेतरतीब उपयोग न सिर्फ औषधि प्रतिरोध को बढ़ावा दे रहा है, अपितु पशुधन एवं जनस्वास्थ्य के लिए भी संकट पैदा कर रहा है। केवल अंतः परजीवीनाशी औषधियां ही संपूर्ण कृमिनाशन हेतु जिम्मेदार नहीं होतीं। इसके लिए पशु एवं पशुघर की साफ–सफाई व स्वच्छता के साथ ही चारागाहों, पीने के पानी के स्थानों एवं तालाबों आदि के आस–पास साफ–सफाई भी महत्वपूर्ण है। बेहतर प्रबंधन ही परजीवियों को नियंत्रित करने का सर्वोत्तम उपाय है।

- पीड़ित पशु का प्रजनन तंत्र भी बुरी तरह प्रभावित होता है और गर्भपात भी हो सकता है।
- अन्य परजीवी, विषाणु अथवा जीवाणु जनित रोगों के प्रति प्रतिरोध क्षमता भी प्रभावित होती है, अर्थात पशु आसानी से अन्य रोगों की चपेट में आ जाता है।
- पशु का उत्पादन भी बुरी तरह से प्रभावित होता है।

पशु चिकित्सा विज्ञानियों ने माना है कि जिन पशुओं में बाहरी तौर से अंतः परजीवी प्रकोप के दुष्प्रभाव गंभीर रूप से दृष्टिगोचर नहीं हुए हों, उनमें कृमिनाशक औषधि देने के फौरन बाद ही स्वास्थ्य एवं उत्पादन में स्पष्ट सुधार नजर आने लगता है। इसलिए कृमिनाशन हेतु ''उपचार से बेहतर बचाव'' का नियम सर्वथा उपयुक्त है।

कृमिनाशक औषधियों का विवेकपूर्ण प्रयोग

विश्व भर में परजीवी रोग विशेषज्ञ आज कृमिनाशक औषधियों की प्रतिरोधकता की समस्या से सर्वाधिक चिंतित हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि पशुओं में पारंपरिक रूप से प्रयोग में लाई जाने वाली कृमिनाशक औषधियों के अंधाधुंध उपयोग ने एकल या बहु–औषधीय प्रतिरोधकता पैदा कर दी है। इस प्रतिरोधकता के लिए दवा की खुराक मानकों से कम दी जानी सर्वाधिक जिम्मेदार है। दूसरी ओर पूरी तरह रासायनिक नियंत्रण पर निर्भर रहते हुए, औषधि का बारम्बार और बेतरतीब प्रयोग भी प्रतिरोधकता के लिए जिम्मेदार है। परजीवियों द्वारा हासिल की जाने वाली यह प्रतिरोधकता न सिर्फ उपचार की लागत को बढ़ा देती है, अपितु उत्पादन क्षमता की कमी के साथ वातावरण में

बेहतर साफ-सफाई और देखरेख भी जरूरी

क्या सावधानियां बरतें

- दवा देने का तरीका भी परजीवी नियंत्रण हेतु एक महत्वपूर्ण कारक है। यह सुनिश्चित कर लें कि दवा जीभ के पिछले हिस्से में रखी जाए, जिससे वह सीधे गले से नीचे उतर जाए और पशु के रूमेन अर्थात रोमंथ में जाकर अधिकतम क्षमता से कार्य कर सके। यदि दवा मुंह के अग्र भाग में दी जाती है तो इससे दवा को रोमंथ को बाईपास कर गुजर जाने का मौका मिल जाता है।
- दवा देने से 24 घंटे पहले से ही पशु को दिए जाने वाले चारे–दाने की मात्रा सीमित कर दें। सुबह खाली पेट दवा देने से एक दिन पहले सुबह चारा कम दें और हरा चारा तो बिल्कुल न दें। ग्याभिन मादा, रोगी और कमजोर पशु के अलावा अन्य को पूरे दिन एवं रात चारा नहीं दें। हां, पानी भरपूर दें। दवा देने के बाद भी चार–छः घंटे तक पशु को चारा नहीं देना लाभकारी होता है।
- पशु चिकित्सक द्वारा तय दवा एवं बताई गई मात्रा अनुसार ही दवा दें। यह दवा के विरुद्ध परजीवी द्वारा प्रतिरोधकता हासिल करने से बचाव के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- निर्धारित समय के अंतर पर औषधि देने के साथ ही समय–समय पर पशु के स्वास्थ्य की एवं गोबर की जांच कराई जानी आवश्यक है जिससे अंतःकृमियों से होने वाले नुकसान को नगण्य किया जा सके। डेरी में किसी नए पशु को प्रवेश देने से पूर्व उसे अंतःपरजीनाशक औषधि दें एवं इसके दो–तीन दिन बाद ही अन्य पशुओं के साथ छोड़ें। बाड़े में सभी पशुओं को एक साथ ही कृमिनाशक औषधि दी जाए। चूंकि परजीवियों की ढेरों किस्में होती हैं और प्रत्येक के लिए भिन्न प्रकार की औषधि उपयोग में ली जाती है, अतः औषधि का चयन पशु चिकित्सक की सलाह से करें और बेतरतीब एवं बेजा इस्तेमाल से बचें।

परजीवियों का संदूषण बढ़ाने के लिए भी जिम्मेदार होती है, क्योंकि जैसे–जैसे दवाओं का प्रभाव घटता है, इनकी खुराक बढ़ती जाती है और दवा देने की निरंतरता बढ़ती जाती है। यह तथ्य भी ध्यान देने योग्य है कि हर बार पुरानी दवाओं की प्रतिरोधकता की स्थिति में परजीवी नाशन के लिए नई दवाओं की खोज करनी होगी, जिसमें अत्यधिक धनराशि व्यय होती है और इस प्रकार परजीवी नाशन के लिए पशुपालक को हर बार अधिक व्यय करना होगा।

बहरहाल, अंतःपरजीवी नाशन के लिए उपयोग में लाई जा रही अधिकांश औषधियां अभी भी डेरी पशुओं के लिए प्रभावी हैं और यदि अभी से ही हमने इनका विवेकपूर्ण इस्तेमाल आरंभ कर दिया तो बहुत–सी समस्याओं को दूर किया जा सकता है।

कैसे करें प्रभावी परजीवी नियंत्रण

डेरी पशुओं में परजीवी नाशक दवा देने में तीन बिंदु महत्वपूर्ण हैं। क्या, कितना और कब। क्या से तात्पर्य है कि कौन–सी परजीवी नाशक दवा का इस्तेमाल किया जाए। आज बाजार में अनेक प्रकार की दवाएं उपलब्ध हैं और इनमें बहुत–सी दवाएं ऐसी हैं जो अनेक प्रकार के परजीवियों के लिए समान रूप से प्रभावी हैं। इन्हें ब्रॉड–स्पेक्ट्रम अंतःपरजीवी नाशक दवाओं के रूप में जाना जाता है। आमतौर से ऐसी औषधियां ही धड़ल्ले से प्रयोग की जा रही हैं और प्रतिरोधकता का कारण बन रही हैं।

एक ही दवा का निरंतर इस्तेमाल बहुधा प्रतिरोधकता को जन्म देता है। इसलिए वैज्ञानिकों द्वारा सुझाव दिया गया कि ब्रॉड–स्पेक्ट्रम अंतःपरजीवी नाशक दवाओं को साल–छः महीने में बदलते हुए इस्तेमाल करना चाहिए। यह एक बेहतर उपाय है। यह अधिक प्रभावशाली है और एक ही दवा के विरुद्ध परजीवी फौरन प्रतिरोधकता हासिल नहीं कर पाता। परंतु यह उपाय भी बहुत लंबे समय तक कारगर नहीं है। ऐसा पाया गया है कि दो दवाओं के

पूरे समूह को कृमिनाशक दवा एक साथ दें

बदलते इस्तेमाल से प्रतिरोधकता देरी से जरूर आती है, पर यह दोनों दवाओं के विरुद्ध आ जाती है। इसलिए सर्वोत्तम उपाय है कि परजीवी पीड़न की दशा में परजीवी की जांच के बाद उसी दवा का प्रयोग किया जाए जो उस परजीवी विशेष के विरुद्ध सर्वाधिक प्रभावशाली हो। उदाहरण के लिए यदि किसी पशु में रक्तचूषक परजीवी हीमॉन्कस का प्रकोप प्रयोगशाला जांच के बाद स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाए तो ऐसे पशु को ब्रॉड–स्पेक्ट्रम अंतःपरजीवी नाशक दवा के स्थान पर इस परजीवी विशेष के लिए उपयुक्त दवा क्लोजैंटल देना बेहतर होगा। सार यह है कि परजीवी प्रकोप की दशा में प्रयोगशाला जांच के बाद ही दवा तय की जाए तो बेहतर होगा। इससे न सिर्फ परजीवी नाशन अधिक प्रभावशाली होगा अपितु दवा के विरुद्ध प्रतिरोधकता को रोकने में भी सहायता मिलेगी।

दूसरा बिंदु है दवा कितनी दी जाए अर्थात दवा की खुराक। दी जाने वाली दवा की सही मात्रा तय करना और देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह तथ्य ध्यान रखने योग्य है कि पशु को दवा की अधिकतम स्वीकृत खुराक दी जानी चाहिए। जिस गाय या भैंस को दवा दी जानी है, उस क्षेत्र में उस नस्ल की गाय या भैंस का जो अधिकतम शरीर भार पाया जाता है, उसके आधार पर दवा की खुराक तय की जानी बेहतर होगी। तात्पर्य यह है कि दी जाने वाली दवा की खुराक किसी भी हालत में स्वीकृत खुराक से कम नहीं हो अन्यथा यह पूर्ण रूप से परजीवी नाशन नहीं करेगी और इस दवा के विरुद्ध प्रतिरोधकता जल्दी पैदा होने की संभावना बनी रहेगी।

तीसरा महत्वपूर्ण बिंदु है कब दें कृमिनाशक औषधि। समस्त डेरी पशुओं को नियमित रूप से कृमिनाशक औषधि दी जानी चाहिए। बछड़े–बछड़ियों को एक माह की आयु में दवा की पहली खुराक देनी है और फिर हर माह दवा दी जानी है। ओसरों को दवा प्रत्येक दो माह में दी जानी है। वयस्क पशुओं में हर चार माह में दवा दी जानी उपयुक्त होती है। गर्भवती मादा को पांच माह की गर्भावस्था पर और प्रसव से दो सप्ताह पूर्व कृमिनाशक औषधि देना लाभकारी होता है। प्रसव को दो सप्ताह बाद पुनः औषधि दें और एक माह बाद इसे दोहराएं। इसके लिए आपकी डेरी में पशुओं को दी गई औषधि का नाम, मात्रा और दिनांक अवश्य नोट कर के रखें जिससे अगले चरण में औषधि चयन में पशु चिकित्सक को आसानी रहे। इस प्रकार नियमित अंतराल पर कृमिनाशन करने से संपूर्ण कृमिनाशन हासिल किया जा सकता है और भारी नुकसान से बचा जा सकता है। ■

जानकारी

पशु रोगों से बचाव
टीकाकरण कैलेंडर

संजय कुमार एवं कौशलेन्द्र कुमार
पशु पोषण विभाग, बिहार पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, पटना
एवं
रजनी कुमारी
आई.सी.ए.आर.–आर.सी.ए.आर., पटना

दुधारू पशुओं को पूर्ण रूप से स्वस्थ रखने एवं विभिन्न रोगों से बचाव के लिए समय पर टीकाकरण कराना बहुत जरूरी है। इस लेख में उत्पादक पशुओं जैसे गाय, भैंस आदि के स्वास्थ्य की जानकारी एवं समय पर टीकाकरण के लिए कैलेन्डर का उल्लेख किया गया है।

दुधारू पशुओं का टीकाकरण कैलेंडर सारणी–1 में दिया गया है। लेकिन कुछ सावधानियां जरूर रखनी चाहिए।

- छह महीने से छोटे बच्चों में टीकाकरण नहीं करवाना चाहिए।
- टीका मुख्य रूप से गरदन के दायें एवं बायें भाग में दिया जाना चाहिए।
- टीका लगाते समय अगर खून निकलने लगे तो हल्का–हल्का रगड़ना चाहिए, जिससे गांठ होने से रोका जा सके।
- टीकाकरण प्रत्येक पशु को ध्यान में रखते हुए उसी के अनुसार होना चाहिए।
- टीका देने के बाद उसका अधिक असर 21 दिन के बाद होता है। इसलिए टीकाकरण ऋतु के तुरंत बाद करवाना चाहिए।

रेबीज़ की रोकथाम

यह रोग कुत्तों के काटने से होता है। इस रोग का टीका बाजार में उपलब्ध है। गाय एवं भैंस में कुत्ता काटने के बाद छः डोज़ देना पड़ता है। यह रोग कुत्तों में नहीं रहने के लिए रोग निरोधक यानी प्रोफाइलैक्टिक डोज नियमित रूप से वर्ष में एक बार दिलवानी चाहिए। कुत्ता काटने के बाद पशुओं में 0, 3, 7, 14, 30 एवं 90 दिन के अंतराल में टीकाकरण करवाना बहुत जरूरी है। इसके लिए कुत्ता काटने के तुरंत बाद पशु चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए।

- टीका देने के बाद पशुओं को पानी एवं खुराक देना चाहिए।
- टीका देने के पहले, टीकाकरण के बारे में एवं टीका के प्रकार की जानकारी जरूरी है।
- गलाफुला रोग अगर क्षेत्र में बार–बार होता है तो वर्ष में दो बार टीका देना चाहिए। प्रथम बार देने के बाद 5 से 6 महीने के बाद इसी टीका को देना चाहिए।

सारणी–1: दुधारू पशुओं का टीकाकरण कैलेंडर

महीना	टीका का नाम	टीके की डोज़	असर होने का समय
जनवरी–फरवरी	एफ एम डी ऑयल टीका एफ एम डी जेल रसी	2 मिली. सबकट 3 मिली. सबकट	8 महीने 6 महीने
मार्च	ब्रुसेलोसिस	5 मिली. सबकट	जीवनभर
अक्टूबर	गलाफुला टीका	5 मिली. सबकट	6 महीने
नवंबर	बी क्यू रोग का टीका, एफएमडी ऑयल टीका	5 मिली. सबकट	1 वर्ष
दिसंबर	गलाफुला टीका, एफएमडी ऑयल रसी	–	6 महीने

नोटः

- एन्थ्रेक्स का टीका एक बार 1 मिली. सबकट देना चाहिए।
- डोज मार्गदर्शन के लिए उत्पादक कंपनी की सूचना को खास ध्यान में रखना चाहिए।

सामान्यतः पशुओं में कोई भी टीका देने के बाद एन्टीजन, एन्टीबॉडी रिएक्शन करने लगता है। टीका देने के बाद दो/तीन दिन तक पशु को बुखार आ सकता है, बेचैन रह सकता है एवं उत्पादन में थोड़ी कमी आ सकती है। इस स्थिति में घबराएं नहीं। ये सब समय के साथ ठीक हो जाता है एवं उत्पादन तथा लाभ समय पर बना रहता है। ■

सलाह

यूरिया के उपचार से पशु चारे को अधिक पोषक बनाएं

कौशलेन्द्र कुमार, संजय कुमार एवं रवि रंजन कुमार सिन्हा

बिहार पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

भारत एवं दक्षिण–पूर्व एशिया में विशेषकर धान का पुआल, गेहूँ का भूसा, मक्के व ज्वार की कड़बी इत्यादि का उपयोग पशुचारा के रूप में अत्यधिक होता है। लेकिन इन सभी सूखे पशुचारे में पोषक तत्वों जैसे कि नाइट्रोजन, धातु, विटामिन, ऊर्जा, प्रोटीन की मात्रा कम होती है, जबकि लिगनिन व सिलिका की मात्रा अत्यधिक होती है, जिस कारण इनका पोषक महत्व कम हो जाता है। सूखे चारे की पोषक क्षमता बढ़ाने के अनेक तरीके हैं जिनमें यूरिया उपचार को सबसे सस्ता, व्यावहारिक व बेहतर तरीका माना गया है। इससे पशुपालक कम पोषक क्षमता वाले चारे को रासायनिक विधि द्वारा उपचारित कर उसकी क्षमता को बढ़ा सकते हैं तथा कम खर्च में ज्यादा उत्पादन ले सकते हैं।

यूरिया का इस्तेमाल विशेष रूप से सूखे पशुचारे में नाइट्रोजन की मात्रा को बढ़ाने तथा चारे की पाचन क्षमता को बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसमें फर्टिलाइजर ग्रेड यूरिया का इस्तेमाल होता है। सबसे पहले 14 किलोग्राम यूरिया लें, उसको 200 लीटर पानी में घोल बना लें फिर 4 क्विंटल सूखा हुआ भुसा / पुआल / घास लें, उसको साफ जमीन पर अच्छी तरह से फैलाने के बाद स्प्रेयर मशीन के द्वारा भूसे के ऊपर धीरे–धीरे स्प्रे करें तथा साथ में मिलाते रहें ताकि यूरिया का घोल पूरी तरह से चारे के साथ मिल जाए। उसके बाद एक कोने में मिश्रित चारे को इकट्ठा कर प्लास्टिक तिरपाल/शीट से पूरी तरह से ढंक दें, ताकि अमोनिया गैस वातावरण में बाहर ना निकले। उपचारित चारे को 9–15 दिनों तक इकट्ठे यथा स्थिति में ढंके हुए रहने दें। समय पूरा होने के बाद चारे का उपयोग पशुओं को खिलाने के लिए कर सकते हैं। यूरिया उपचार में नमी की मात्रा 40 प्रतिशत (यदि चारा कटा हुआ नहीं हो व खड़ी पुआल के रूप में हो) अथवा 50 प्रतिशत (यदि भूसे के रूप में व टुकड़ों में कटा हुआ हो)

ध्यान रखने योग्य महत्वपूर्ण बातें

- यूरिया उपचार व मिश्रण के समय पानी चारे से बाहर नहीं आना चाहिए।
- छह माह से ज्यादा उम्र के जानवरों को ही खिलायें।
- शुरूआत धीरे–धीरे करें, अचानक पूरी तरह से खिलाना प्रारंभ न करें।
- उपचारित चारे को अधिकतम एक साल तक रख सकते हैं।
- बीच–बीच में फफूंदी संक्रमण की जाँच करते रहें।

रखनी चाहिए। ताजा कटा हुआ चारा, जिसमें नमी की मात्रा अधिक है उसमें यूरिया का घोल बनाने की जरूरत नही है, बल्कि साबुत यूरिया अच्छी तरह से समुचित मात्रा में प्रयोग कर सकते हैं।

पशु चारे का यूरिया उपचार

यूरिया उपचारित चारे की पोषक क्षमता

पशुचारे में (भूसा, घास, पुआल इत्यादि) अनेक तरह के तत्व उपस्थित होते हैं, जैसे कि सेलुलोज, हेमिसेलुलोज, लिगनिन, सिलिका, प्रोटीन इत्यादि। सेलुलोज व लिगनिन एक दूसरे के साथ लिगनो–सेलुलोजिक सेतु बनाते हैं, जिसमें हाइड्रोजन जुड़ाव भी होता है जो बहुत मजबूत होता है। इस तरह के सेतु को तोड़ने में पशुओं के भीतर उपस्थित बैक्टीरिया अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन ज्यादा मजबूत जुड़ाव के कारण प्रायः भीतर उपस्थित बैक्टीरिया असफल हो जाते हैं, जिससे चारे में उपस्थित पोषक तत्वों का इस्तेमाल व शोषण शरीर में नहीं हो पाता और वह गोबर के द्वारा बिना इस्तेमाल के बाहर आ जाता है।

अमोनिएशन के द्वारा हम पशुचारे में उपस्थित लिगनो–सेलुलोजिक सेतु को कमजोर कर देते हैं क्योंकि अमोनिया के अणु उसमें उपस्थित हाइड्रोजन जुड़ाव को काफी कमजोर कर देते हैं और जब उस पर आमाशय के भीतर उपस्थित बैक्टीरिया हमला करते हैं तो वह जल्दी टूट जाता है और उस चारे में उपस्थित पोषक तत्वों का पाचन बढ़ जाता है और बेहतर ढंग से शरीर में उपयोग होता है।

सारणी–1 : यूरिया उपचार से पशुचारे में सुधार

तत्व	सामान्य भूसा (%)	उपचारित भूसा (%)
सी. पी. (प्रोटीन)	3–3.5	6–8.0
डी. सी. पी. (पाच्य प्रोटीन)	0	3–4.0
टी. डी. एन. (ऊर्जा)	40–45	50–55
सेलुलोज डी. (पाच्य)	40–45	70–75

यूरिया उपचार व अमोनिएशन के फायदे

- फसल अवशेष के बेहतर उपयोग से दाना की खपत कम कर सकते हैं, जिससे पशुपालक कम लागत में समान उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।
- पशुपालक दाने का पैसा बचाकर अतिरिक्त लाभ कमा सकते हैं या पूंजी जमा कर सकते हैं।
- प्रायः भूसे व घास को खेतों में जला दिया जाता है, जिससे वातावरण में प्रदूषण फैलता है। इस तकनीक से हम वातावरण में प्रदूषण को कम कर सकते हैं।
- यूरिया उपचार से पशुपालक कम गुणवत्ता वाले पशुचारे को बेहतर बनाकर पशुओं के आहार के रूप में उपयोग कर सकते हैं तथा चारे की कमी को काफी हद तक कम कर सकते हैं।
- अमोनिया गैस फफूंदी नाशक होता है, इसलिए इस तरह के उपचारित चारे को लंबे समय तक रख सकते हैं (अधिकतम एक साल तक)।
- यूरिया उपचारित चारा कम लागत में अच्छा परिणाम देता है।
- इस तकनीक से कम गुणवत्ता वाले चारे को सुपाच्य व खाने योग्य बना सकते है। ■

नई तकनीक

गाय एवं भैसों की उत्पादन क्षमता को नियमित एवं बेहतर बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि उनकी प्रजनन क्षमता भी बेहतर बनी रहे। यदि पशु का प्रजनन स्वास्थ्य ठीक रहता है तो पशु की उत्पादन क्षमता उच्च स्तर पर बनी रहेगी और पशु अपने जीवनकाल में ज्यादा से ज्यादा स्वस्थ बछड़ों एवं बछियों को पैदा कर पायेगा। पशु प्रजनन संबंधित विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु तकनीकी ज्ञान एवं वैज्ञानिक संस्तुतियां उपलब्ध हैं, परन्तु हमारे अधिकांश डेरी किसान इस ज्ञान से अनभिज्ञ हैं। आज भी व्यावसायिक डेरी फार्मों में प्रजनन संबंधित समस्याओं की बहुतायत है एवं सटीक वैज्ञानिक जानकारी के अभाव में इन फार्मों में पशु अकसर बाँझपन के शिकार हो जाते हैं एवं डेरी किसान अपने इन पशुओं को बेचने पर मजबूर हो जाते हैं। यहाँ तक कि कई डेरी फार्मों पर तो दुधारू पशु (संकर गाय अथवा भैंस) पहली बार गर्मी में 4–5 वर्षों में आती हैं या फिर पहली ब्यांत के बाद फिर गाभिन नहीं होती। अब डेरी किसान इन समस्याओं का समाधान मात्र एक क्लिक पर हसिल कर सकते हैं। आइए जानते हैं आईवीआरआई द्वारा विकसित पशु प्रजनन एप्प के बारे में जो डेरी किसाने को इस संदर्भ में सही सलाह दे रहा है, तुरंत।

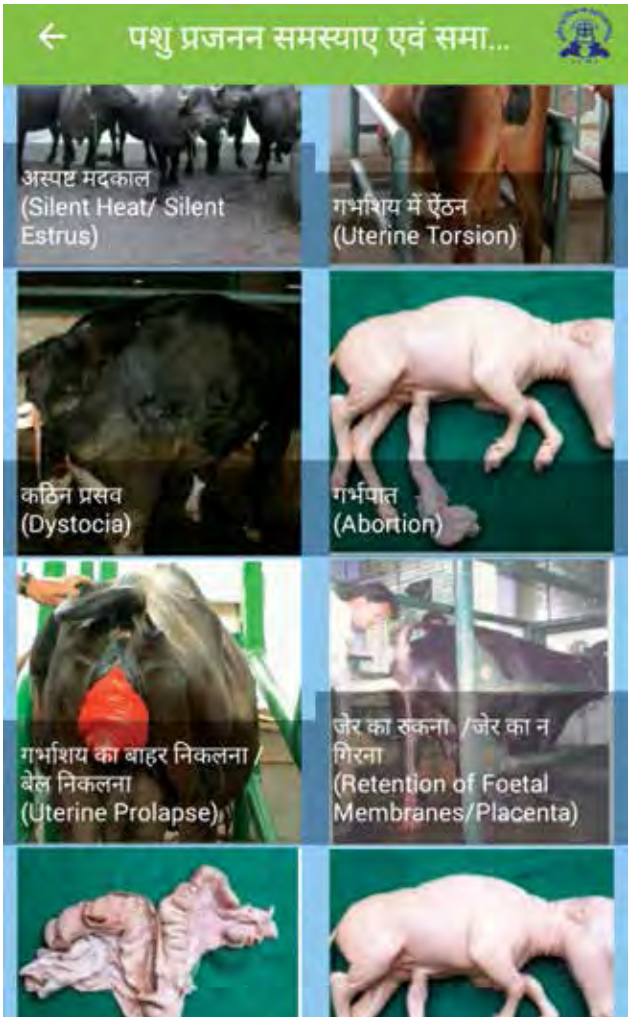

पशु प्रजनन की समस्याओं का समाधान, कारगर एप्प से

रूपसी तिवारी एवं त्रिवेणी दत्त

भाकृअनुप–भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान

इज्जतनगर – 243122 (उ.प्र.)

वर्तमान में विश्व भर में मोबाइल तकनीकी का उपयोग कर ज्ञान का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। आज भारत में मोबाइल उपयोगकर्ता 1078 मिलियन हैं, जिनमें से 42.34% ग्रामीण उपयोगकर्ता हैं। चीन के बाद भारत दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल इंटरनेट उपयोगकर्ता है। सन् 2020 तक, ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लगभग 315 मिलियन अर्थात 48% भारतीय इंटरनेट से जुड़े होंगे। लगभग 220 मिलियन स्मार्ट फोन प्रयोक्ताओं के साथ आज भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा स्मार्ट फोन बाजार है और सन् 2021 में 702 मिलियन तक बढ़ोतरी संभव है। स्मार्टफोन अब

सस्ता हो रहा है और सन् 2011–2016 के दौरान इसकी कीमत 440 यूएस डॉलर से घटकर 283 यूएस डॉलर तक रह गयी है।

ज्ञान के प्रचार–प्रसार के इस उभरते हुए माध्यम को उपयोग में लाकर तकनीकी ज्ञान को डेरी किसानों तक पहुचाने के लिए "आईवीआरआई–पशु प्रजनन एप्प" का विकास भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर एवं भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से किया गया है।

"आईवीआरआई–पशु प्रजनन एप्प" डेरी किसानों को गाय एवं भैसों की विभिन्न पशु प्रजनन संबंधित समस्याओं की जानकारी प्रदान करने एवं उनका उपचार तथा रोकथाम करने में सहायक है। इस एप्प में गाय एवं भैंसों की 12 प्रजनन सम्बन्धी समस्याएं जैसे गर्मी में नहीं आना, बार–बार गर्मी में आना, अस्पष्ट मदकाल, गर्भाशय में ऐंठन, कठिन प्रसव, गर्भपात, गर्भाशय का बाहर निकलना, जेर का रूकना, गर्भाशय शोथ, संक्रामक गर्भपात, कैम्पाइलोबैक्टेरिओसिस तथा संक्रामक बोवाइन राईनोट्रेकिआइटिस–संक्रामक पास्चुलर बल्वो वेजिनाइटिस का वर्णन किया गया है। प्रमुख समस्याओं एवं रोगों को मुख्य शीर्षकों जैसे क्या एवं कैसे, लक्षण, उपचार एवं रोकथाम में बताया गया है। इस एप्प की सहायता से विद्यार्थी, पशु चिकित्सक एवं पशुधन उद्यमी पशुओं की सम्भावित प्रजनन सम्बन्धित समस्याओं को आसानी से पहचान सकते हैं तथा उपचार एवं रोकथाम हेतु जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। किन–किन परिस्थितियों में पशु चिकित्सक की सहायता की जरूरत पड़ेगी यह भी आसानी से जान सकते हैं। साथ ही इस एप्प की सहायता से गाय एवं भैसों में कृत्रिम गर्भाधान की जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है।

इस एप्प द्वारा कम पढ़े–लिखे डेरी किसान भी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि कि इसमें दी गयी सभी जानकारी का ऑडियो भी इस एप्प में दिया गया है जिसे इच्छुक डेरी किसान सुन सकते हैं एवं आवश्यकता अनुसार डाउनलोड कर अपने मोबाइल में स्टोर भी कर सकते हैं। यह एप्प गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध है। वर्तमान में यह हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है। निकट भविष्य में यह एप्प कुल 12 भाषाओं (गुजराती, पंजाबी, तमिल, तेलगु, मलयालम, बांग्ला, उड़िया, मराठी, कन्नड़, असमिया) में उपलब्ध होगा। डेरी किसानों को अपनी भाषा में एप्प को अपने मोबाइल पर एक बार डाउनलोड करना होगा एवं बाद में वे इसे बिना इंटरनेट के ही यानी ऑफ लाइन चला सकते हैं। डाउनलोड के लिए निम्न लिंक पर क्लिक करें। ■

Link: https://play.google.com/store/apps/details?id=com.mraaapsjd.akmu.pasujanapp&hl=en

जनवरी

1 इस महीने कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में भारी बर्फ़बारी होती है, जिससे पूरे उत्तरी भारत में शीत लहर और पाले का प्रकोप हो जाता है। इसलिए जरूरी है कि पशुओं को सर्दी से बचाकर रखने के सभी उपाय किये जाएं।

2 पाला पड़ने पर पशुओं के बाड़े में कृत्रिम प्रकाश और गर्माहट के पर्याप्त उपाय करें। पशुओं को गुनगुना गर्म आहार और पीने का पानी देना चाहिए। इस समय चारे को इकट्ठा करने और भंडारित करने का काम शुरू कर देना चाहिए।

3 कमज़ोर ओर बीमार पशुओं को सर्दी से बचाने के लिए मोटे कपड़े या टाट के कपड़े से ढंककर रखें। रात के समय सभी पशुओं को ऊपर से ढंके हुए आवास या बाड़े में रखें। पशुओं को नमींदार जगहों पर रखने से बचें।

4 साथ ही रात को गर्माहट के लिए जलाये जाने वाले अलाव के धुएं से पशुओं को बचाएं। नमी और धुएं से पशुओं में निमोनिया के प्रकोप की संभावना बढ़ जाती है। पशुओं में डिवर्मिंग करने का यह उपयुक्त समय है।

5 दूध देने वाले पशुओं के शरीर के तापमान को उपयुक्त बनाये रखने के लिए उन्हें खली और गुड़ का मिश्रण खिलाना चाहिए। पशुओं में आवश्यक लवणों के स्तर को अनुकूल बनाये रखने के लिए उन्हें आहार के साथ उपयुक्त मात्रा में लवण मिश्रण भी देना चाहिए।

6 पशुओं को बाह्य–पर जीवियों से बचाने के लिए उनके बाड़े को साफ–सुथरा रखना चाहिए। निरगुंडी (वाइटेक्स निगुंडो), तुलसी (ओसिमम सैंक्टम) या नीबू–घास (सिम्बोपोगोन सिट्रेट्स) की पत्तियों को बांधकर पशुओं के बाड़े में लटकाने से इनकी गंध के कारण बाह्य–परजीवी दूर रहते हैं।

7 बाड़े को स्वच्छ रखने के लिए नीम के तेल वाले जर्मनाशक का छिड़काव करना चाहिए। यदि पशुओं को अभी तक खुरपका–मुंहपका रोग, पीपीआर, हीमोरेजिक सेप्टीसीमिया, एंटरोटॉक्सीमिया, ब्लैक क्वार्टर आदि का टीका नहीं लगाया गया है तो यह काम अभी करें। बच्चों में यह काम जरूर और तुरन्त करें।

8 अलफा अलफा (मेडिरागो सैटाइवा), जिसे रिजका भी कहते हैं, और बरसीम क्लोवर (ट्राइफोलियम एलैक्सेन्ड्रिनम) जैसी चारा फसलों की हर 20–30 दिन पर सिंचाई करनी चाहिए और जई की सिंचाई हर 20–22 दिन पर करें।

2018

क कैलेंडर

फरवरी

1. इस महीने कई जगहों पर बरसात होती है। पशुओं को भीगे मौसम से बचाने के लिए उपयुक्त उपाय करें और उन्हें बरसात के बाद आसमान साफ होने पर गिरते तापमान से बचाने की व्यवस्था भी करनी चाहिए।

2. पशुओं को सर्दी और प्रतिकूल मौसम की मार से बचाने के लिए जो उपाय जनवरी माह में बताये गये हैं, उन्हें इस महीने में भी दोहराएं।

3. पशुओं के लिए नियंत्रित प्रजनन का कार्यक्रम फरवरी में जारी रखना चाहिए ताकि इसमें शामिल पशु इस महीने गर्भधारण कर सकें।

4. सभी नये जन्मे पशुओं की डिवर्मिंग करनी चाहिए। बच्चों के लिए टीकाकरण का भी ध्यान रखें।

5. डेरी पशुओं में मैस्टीटाइटिस की रोकथाम के लिए दूध को पूरी तरह निकालें।

6. चारा फसलों, अलफा अलफा और बरसीम क्लोवर तथा जई की सिंचाई क्रमशः हर 12–14 दिन पर और 18–20 दिन पर करनी चाहिए।

7. बरसीम क्लोवर और अलफा अलफा को सुखाकर सूखे चारे की तरह भंडारित करें या इससे साइलेज बना लें। हरे चारे की कमी या इसके अभाव की दशा में इसका उपयोग कर पशुओं को पोषण दिया जा सकता है।

सौजन्य
पशुपालक कैलेंडर, पशुपालन, डेरी और मात्स्यिकी विभाग,
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

रिपोर्ट

आईडीए के जागरूकता अभियानों से चली नई लहर

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस (26 नवंबर)

आईडीए के प्रयासों और समर्थन से देशभर में डॉ. वर्गीज़ कुरियन के जन्म दिवस 26 नवबंर को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत सन् 2014 में हुई। तब से इसे दूध, दूध उत्पादों और डेरी व्यवसाय के प्रति जन–जागरूकता जगाने वाले माध्यम के रूप में लगातार मनाया जा रहा है। आईडीए के अलावा देश के अनेक प्रमुख दूध उत्पादक संघ, मिल्क यूनियन, डेरी संस्थान और संबंधित विभागों द्वारा भी इस अवसर पर विशेष आयोजन किये जाते हैं।

आईडीए (पश्चिम क्षेत्र) में आईडीए के अध्यक्ष श्री अरूण नरके ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. वर्गीज़ कुरियन के साथ बिताये अपने पलों को याद किया और कहा कि यह उनकी दूरदृष्टि थी कि आज भारत दूध उत्पादन में दुनिया में नंबर एक है। आईडीए (पश्चिमी क्षेत्र) के अध्यक्ष श्री अरूण पाटिल ने बताया कि इस अवसर पर 'मिशन मिल्क क्वालिटी' नाम से पूरे पश्चिम क्षेत्र में एक बड़ा अभियान छेड़ा जा रहा है, जिससे दूध की गुणवत्ता को सुधारने का अवसर मिलेगा।

आईडीए (पश्चिम क्षेत्र) में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस का आयोजन

आईडीए (दक्षिण क्षेत्र) और तमिलनाडु स्टेट चैप्टर का संयुक्त आयोजन

आईडीए (दक्षिण क्षेत्र) और तमिलनाडु स्टेट चैप्टर ने संयुक्त रूप से 'दूध और इसके स्वास्थ्य प्रभाव' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें संबंधित विषयों पर कॉलेज के छात्रों के लिए अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। आईडीए (पूर्वी क्षेत्र) ने नई पहल करते हुए कोलकाता में आर्थिक रूप से कमज़ोर और सामाजिक रूप से पिछड़े हुए बच्चों तथा निवासियों को एक–एक गिलास दूध पीने को दिया। आईडीए के केरल स्टेट चैप्टर, पंजाब स्टेट चैप्टर, राजस्थान स्टेट चैप्टर और बिहार स्टेट चैप्टर में भी अनेक कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं के माध्यम से राष्ट्रीय दुग्ध दिवस मनाकर डॉ. कुरियन के योगदानों को सराहा गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में छात्रों, डेरी किसानों तथा अन्य संबंधितों को पुरस्कार दिये गये।

उदयपुर में जागरूकता कार्यक्रम

'गोकुल' के आयोजन में आईडीए अध्यक्ष की भागीदारी

डॉ. कुरियन की कर्मभूमि आनंद में 'अमूल' ने एक विशेष पहल करते हुए उनकी जन्मभूमि कोझिकोड से कर्मभूमि आनंद तक के लिए 50 बाइकर्स की एक रैली आयोजित की। बीस नवंबर को शुरू हुई इस रैली का समापन 26 नवंबर को हुआ और इस दौरान लगभग 1800 किलोमीटर की यात्रा करके बाइकर्स ने रास्ते के गांवों में डॉ. वर्गीज़ कुरियन के कामों को जाना–समझा और सराहा। गोकुल डेरी ने 22 नवंबर को इसमें शामिल होकर इस अभियान को आगे बढ़ाया। श्री अरूण नरके ने इस अवसर पर बाइकर्स रैली को संबोधित भी किया। अजमेर मिल्क यूनियन, केडीसीएमपीयू लिमिटेड, कोलकाता, मणिपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ, मिल्क मंत्रा डेरी प्राइवेट लिमिटेड और स्वयं क्षीर उत्पादक कंपनी ने भी इस अवसर पर अनेक आयोजनों को संपन्न करके डॉ. कुरियन को याद किया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

बाइकर्स रैली द्वारा जागरूकता अभियान

सीख

दुधारू पशुओं में गरमी को पहचानें

संजय कुमार एवं कौशलेन्द्र कुमार
बिहार पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, पटना
एवं
रजनी कुमारी
आईसीएआर–आरसीएआर, पटना

कृत्रिम या प्राकृतिक गर्भाधान की सफलता के लिए आवश्यक है कि पशु गरमी में आने की सही अवस्था में हो। अपने व्यवहार तथा कुछ शारीरिक लक्षणों से पशु अपने गरमी में आने का सही संकेत देते हैं। इन्हें पहचान कर गर्भधारण की दर को बेहतर बनाया जा सकता है और दुधारू पशुओं से लाभ को बढ़ाया जा सकता है।

आमतौर किसान भाई पशुओं के गर्मी में आने की पहचान कुछ सामान्य लक्षणों से करते हैं, जैसे पशु का अशांत अथवा उत्तेजित हो जाना, खाना कम खाना, दूध कम देना, पूंछ ऊंची कर लेना, इधर–उधर भागना, दूसरे जानवरों के ऊपर चढ़ना, योनि से उजले लसलसे तरल पदार्थ का निकलना, योनि की परत लाल हो जाना, और बार–बार पेशाब आना।

परंतु गर्मी में आने के बाद गर्भशय के किस भाग में सीमेन डालना है एवं कितने समय के बाद गर्भाधान अथवा कृत्रिम गर्भाधान कराना चाहिए, इसका खास महत्व है।

आमतौर पर गायों में गरमी के मध्य समय में (मिड हीट), जिनमें गरमी के सभी लक्षण मौजूद हों, लक्षण शुरू होने के बाद 12 से 16 घंटे में तथा भैंस में 14 से 20 घंटे में कृत्रिम गर्भाधान करवाने से गर्भधारण दर की प्रतिशत अधिकतम होती है। गरमी के समय को तीन भागों में बांटा जा सकता है – गरमी का पूर्व भाग (अर्ली हीट), मध्य भाग (मिड हीट) और अंतिम भाग (लेट हीट)। सारणी – 1 में दिये गये गरमी के लक्षणों को पहचानकर किसान भाई गरमी के मध्य समय में पशुओं को कृत्रिम गर्भाधान के लिए ले जा सकते हैं।

इसके अलावा गरमी में आये पशु की योनि से चिकना लसलसा पदार्थ निकलता है, जिसको लाली अथवा म्युकस कहते हैं। इस लाली के लक्षण गरमी की अवस्था के अनुसार बदलते रहते हैं। इस पर भी सारणी–2 में दिये गये विवरण के अनुसार ध्यान देना चाहिए।

कृत्रिम गर्भाधान कराने के बाद गर्भाशय का परीक्षण ऊपर से करना चाहिए एवं स्थिति का जायजा लेकर पशु चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए। अगर भैंस गरमी में नहीं होती है तो गर्भाशय नरम एवं मुलायम होता है, परंतु पशु जैसे ही गरमी में आता है, वैसे ही हार्मोनल स्राव के असर से कड़ा एवं छोटा हो जाता है। यह समय गर्भाधान के लिए सबसे उपयुक्त होता है। गरमी के अंतिम समय में गर्भाशय धीरे–धीरे नरम होता है।

गायों एवं भैंसों के गरमी के लक्षणों में कुछ अंतर होता है जैसे गाय में गरमी का समय छोटा होता है (12 से 24 घंटे) जबकि भैंस में गरमी का समय लंबा होता है

सारणी–1 : गरमी के लक्षण एवं उनका बदलाव

गरमी का लक्षण	पूर्व भाग (0 से 8 घंटे)	मध्य भाग (12 से 16 घंटे)	अंतिम भाग (24 घंटे)
दूसरे जानवरों के साथ व्यवहार	दूसरे पशुओं से अलग रहने की इच्छा रखती है।	दूसरे पशुओं से मिलने की इच्छा रखती है एवं मिलती है।	दूसरे पशुओं से मिलती है लेकिन सामान्य व्यवहार करती है।
स्वभाव (उग्रता)	स्वभाव शुरू में नरम लगता है बाद में उग्र होने लगता है।	उग्र स्वभाव लगता है, दूसरे जानवरों के ऊपर चढ़ती है अथवा दूसरे जानवर उसके ऊपर चढ़ने की कोशिश करते है।	शांत रहती है।
भूख	खुराक कम खाती है।	बहुत कम खुराक खाती है।	सामान्य खुराक खाती है।
इधर–उधर भागना	कई बार	बार–बार	भागती है।
पीठ के भाग से स्नायु का खिंचना, खास कर संकर गायों में	कभी–कभी	करती है एवं ज्यादा देर तक देखती है।	भागती है एवं धीरे–धीरे सामान्य होती है।
शरीर का तापमान	कभी–कभी बढ़ता है।	बढ़ा हुआ रहता है।	धीरे–धीरे सामान्य होती है।
योनि	योनि टेढ़ी दिखती है।	एकदम सीधा दिखती है।	सामान्य दिखती है।
योनि के अंदर का भाग	थोड़ी लसलसी दिखाई पड़ती है।	पूरी लसलसी दिखाई पड़ती है।	धीरे–धीरे सामान्य होती है।
गर्भाशय की परिस्थिति	गर्भाशय कड़ा होता है।	गर्भाशय ज्यादा कड़ा होता है।	सामान्य

सारणी–2 : गरमी की विभिन्न अवस्थाओं में लाली की स्थिति

म्युकस और लाली की स्थिति	पूर्व भाग (अर्ली हीट)	मध्य भाग (मिड हीट)
रंग	पानी जैसा	परदर्शी एवं गाढ़ा
गाढ़ापन	पतली	गाढ़ा
मात्रा	ज्यादा	कम
स्थिरता	कम स्थिर एवं टूट जाती है।	कम स्थायी योनि मार्ग में एवं नीचे तक लटकती हुई।

(24 से 36 घंटे)। इसी तरह गाय में गरमी का लक्षण अधिक प्रबल होता है, जबकि भैंस में गरमी का लक्षण कम प्रबल होता है, गरमी लगातार होती है, गरमी रह–रह कर आती है, लसलसे पदार्थ (लाली) की मात्रा ज्यादा निकलती है, लाली का लसलसा पदार्थ कम निकलता है। आवाज सामान्य होती है। लंबे समय तक होढ़ ऊंचा कर छाती दिखाती है एवं आवाज निकालती है। एक गाय दूसरी गाय के उपर चढ़ती है। एक भैंस दूसरी भैंस पर कम ही चढ़ती है।

गरमी की पहचान कर प्रजनन दर बढ़ाएं

इन लक्षणों को स्वयं पहचान कर और पशुचिकित्सक की सलाह लेकर प्राकृतिक गर्भाधान या कृत्रिम गर्भाधान करवाना चाहिए। गरमी में आने के लक्षणों को नोट करके सलाह के अनुसार दर्ज करने से निर्णय लेने में आसानी रहती है और सफलता की संभावना बढ़ जाती है। ■

बाज़ार पर नज़र

दुग्ध उत्पाद

दुग्ध उत्पादों के चुने हुए राष्ट्रीय ब्रांडों का मूल्य निम्नलिखित है। साथ ही थोक एवं खुदरा मूल्यों को अलग–अलग बताया गया है।

स्रोतः गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ, दिल्ली एवं कुछ ब्रांडों के विक्रय कार्यालय से प्राप्त सूचना। दिए गए मूल्य 20 दिसम्बर, 2017 के हैं।

थोक मूल्य

स्किम्ड मिल्क पाउडर

ब्रांड	मूल्य प्रति कि.ग्रा.
गोकुल	200.00
कृष्णा	–
मधुसूदन	205.00
सागर	280.00
सौरभ	225.00

खुदरा मूल्य

(टैक्स सहित)

स्किम्ड मिल्क पाउडर

ब्रांड	पैक आकार	एमआरपी (रु.)
अनिक	500 ग्रा. पाउच	195.00
गोकुल	1 कि.ग्रा. पाउच	340.00
मधुसूदन	1 कि.ग्रा. पाउच	300.00
सागर	500 ग्रा. पाउच	150.00
वर्का	1 कि.ग्रा. पाउच	250.00

शिशु दूध पाउडर

ब्रांड	पैक आकार	एमआरपी (रु.)
अमूल स्प्रे	500 ग्राम टिन	182.00
अमूल स्प्रे	1 कि.ग्रा.	350.00
लेक्टोजेन I	400 ग्रा. रीफिल	–

मक्खन

ब्रांड	पैक आकार	एमआरपी (रु.)
अमूल	500 ग्रा.	225.00
डीएमएस	500 ग्रा.	175.00
गोकुल	500 ग्रा.	225.00
मदर डेयरी	500 ग्रा.	225.00
वीटा	500 ग्रा.	207.00
वर्का	500 ग्रा.	220.00

घी

ब्रांड	पैक आकार	एमआरपी (रु.)
अमूल	905 ग्रा. (रीफिल)	505.00
अनिक	1 ली. (सीटीएन)	530.00
गोकुल	1 ली. (पॉली पाउच)	520.00
डीएमएस	1 ली. (पॉलीपैक)	400.00
मधुसूदन	1 ली. (पॉलीपैक)	480.00
मदर डेयरी	902 ग्रा. (रीफिल)	550.00
वर्का	1 ली. (मोनोपैक)	460.00
वीटा	1 ली. (मोनोपैक)	503.00
पतंजलि	1 ली. (पॉलीपैक)	560.00

46वीं डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस

(फरवरी 8–10, 2018)

आमंत्रण

प्रिय डेरी बंधुओं,

इंडियन डेरी एसोसिएशन (दक्षिण क्षेत्र) को 46वीं वार्षिक डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस (डीआईसी) में आपको निमंत्रित करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। डीआईसी का आयोजन 8 से 10 फरवरी, 2018 को अंगमली, कोच्चि, केरल में किया जा रहा है।

पिछले दो दशकों से दूध उत्पादन में भारत का पहला स्थान बना हुआ है और प्रति व्यक्ति दूध उपलब्धता स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित आवश्यकता से अधिक है, यानी हमने दूध में आत्मनिर्भरता हासिल कर ली है। यह उत्पादन हमें पशुओं की विशाल संख्या से प्राप्त होता है, जिनका पालन छोटे और सीमांत किसानों द्वारा कम संसाधनों व निवेष से किया जाता है। इसलिए इनकी प्रति पशु उत्पादकता भी कम होती है। इसके अलावा बढ़ाते शहरीकरण के कारण घटती भूमि से चारे और आहार की उपलब्धता भी कम होती जा रही है। यही समय है जब हमें बेहतर पशु प्रबंध उपायों को अपनाकर पशुओं की उत्पादकता बढ़ते हुए दूध उत्पादन की कुशलता बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। कुछ अन्य उपाय भी अपनाये जाने चाहिए, जैसे गांव से ग्राहक तक उपयुक्त कोल्ड चेन सुविधाओं की स्थापना, प्रभावी नियोजित प्रबंधन विधियों को अपनाकर प्रसंस्करण की लागत को कम करना, दूध उत्पादों की गुणवत्ता को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार सुधारना, मूल्यवर्धन को बढ़ावा देना और विपणन में नये सुधार करना। इससे डेरी उद्योग में एक नई गतिशीलता आएगी और निर्यात के अवसर भी बढ़ेंगे। इस परिदृश्य में 46वीं डीआईसी कर आयोजन इसकी मुख्यय थीम **'डेरी : सफिशिएंसी टू एफिशिएंसी'** के दायरे में किया जा रहा है। इस कांफ्रेंस में भारतीय डेरी सेक्टर में निर्धारित मानदंडों के अनुसार कुशलता बढ़ाने की नीतियों पर गहन चर्चाएं आयोजित की जाएंगी।

डेरी बंधुओं, 46वीं डीआईसी आपको अन्य प्रतिभागियों के साथ विचार–विमर्श, ज्ञान के आदान–प्रदान और जानकारी की साझेदारी का अवसर प्रदान करेगी। प्रतिभागियों को अपने अनुसंधान परिणामों और विचारों को प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा, जिससे वे डेरी क्षेत्र में सतत् विकास में अपना योगदान दे सकेंगे। कांफ्रेंस के अंतर्गत डेरी और इससे जुड़े अन्य क्षेत्रों में विभिन्न प्रौद्योगिकी विकासों को दर्शाया जाएगा, जैसे दूध उत्पादन, प्रसंस्करण, पैकेजिंग, दूध उत्पादों का उत्पादन, व्यर्थ प्रबंध और ऊर्जा का संरक्षण आदि। इसके साथ ही डेरी किसानों, वैज्ञानिकों, उद्योगों और अन्य संबंधितों के योगदान से डेरी सेक्टर के सतत् विकास का रोडमैप भी तैयार करने का प्रयास होगा।

कांफ्रेंस के साथ आयोजित की जाने वाली डेरी एक्सपो में दूध उत्पादन, प्रसंस्करण, चारा और आहार, पैकेजिंग, उत्पाद निर्माण और ऊर्जा संरक्षण जैसे अनेक क्षेत्रों में हुए तकनीकी विकास को प्रदर्शित किया जाएगा। साथ ही एक 'ई–पोस्टर' सत्र का आयोजन भी किया जाएगा, जिसमें नवीनतम अनुसंधानों की जानकारी होगी।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व केरल में केवल एक बार डीआईसी का आयोजन हुआ है – 1988 में 23वीं डीआईसी। आयोजकों द्वारा इस अवसर को अविस्मरणीय बनाने का हर संभव प्रयास किया जा रहा है। ईश्वर के अपने देश में आकर आप निश्चित रूप से प्रसन्न व आनंदित होंगे।

एक बार पुनः हम केरल में आयोजित होने वाली इस कांफ्रेंस में आपकी सक्रिय और अभूतपूर्व भागीदारी की अपेक्षा करते हैं और आपको निमंत्रित करते हैं। इसके बारे में विस्तृत जानकारी **www.46dia.com** पर उपलब्ध है और 'इंडियन डेरीमैन' के आगामी अंकों में प्रकाशित भी की जाएगी। कांफ्रेंस का कर्टन रेज़र वेबसाइट पर उपलब्ध है और इसे आप यू–ट्यूब, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि पर भी देख सकते हैं।

इस संबंध में आप सभी पत्राचार इस पते पर कर सकते हैं – कांफ्रेंस सचिवालय, इंडियन डेरी एसोसिएशन (केरल चैप्टर), कॉलेज ऑफ डेरी साइंस एंड टैक्नोलॉजी अन्नुथी, थ्रिसूर – 680651। ई–मेल आईडी – **46dickerala@gmail.com/idakeralachapter@gmail.com** ।

सादर अभिवादन सहित,

(सी. पी. चार्ल्स)
अध्यक्ष
आईडीए (दक्षिण क्षेत्र)

(अरुण नरके)
अध्यक्ष
इंडियन डेरी एसोसिएशन

ऑनलाइन

ई-पशु हाट

आमदनी बढ़ाने वाला नया नेटवर्क

सीमा चोपड़ा
निदेशक (राजभाषा)
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि भवन, नई दिल्ली

भारत सरकार ने वर्ष 2022 तक देश के किसानों की आमदनी दोगुना करने का लक्ष्य रखा है। इसे पूरा करने के लिए सरकार द्वारा डेरी सेक्टर पर जोर दिया जा रहा है। इसलिए सरकार पशुओं की संख्या और उत्पादकता दोनों को बढ़ाने की दिशा में काम कर रही है। किसानों और उद्यमियों को अधिक संख्या में डेरी व्यवसाय अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने 26 नवम्बर, 2016 को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर ई–पशु हाट (www.pashuhaat.gov.in) पोर्टल को लॉन्च किया। इस अवसर पर केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने कहा कि देश में पहली बार राष्ट्रीय बोवाइन उत्पादकता मिशन के अंतर्गत ई–पशुधन हाट पोर्टल स्थापित किया गया है।

पशु मंडियों को मिल रहा नया रूप

यह पोर्टल देशी नस्लों के लिए प्रजनकों और किसानों को जोड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस पोर्टल के द्वारा किसानों को देशी नस्लों की नस्लवार सूचना प्राप्त होगी। इसमें पशु आहार और चारे की उपलब्धता के लिए पूरी जानकारी भी दी गयी है। फिलहाल पशुधन के लिए कोई संगठित बाजार नहीं है। देश के किसानों की सुविधा के लिए पशु खरीद और बिक्री के लिए ऑनलाइन पोर्टल तैयार किया गया है। इससे किसान एवं प्रजनक देशी नस्ल की गाय एवं भैंसों को खरीद एवं बेच सकेंगे। इस इलेक्ट्रॉनिक मार्किट से किसान हिमीकृत सीमेन और भ्रूण भी खरीद सकेंगे। देश में उपलब्ध जर्मप्लाज्म की सारी सूचना पोर्टल पर अपलोड कर दी गयी है, जिससे किसान इसका तुरंत लाभ उठा सकें। इस तरह का पोर्टल विकसित डेरी देशों में भी उपलब्ध नहीं है। इस पोर्टल के द्वारा देशी नस्लों के संरक्षण एवं संवर्धन को एक नई दिशा मिलेगी।

ई–पशु हाट के उद्देश्य

- पशुधन जर्मप्लाज्म के लिए ई–व्यापार बाजार पोर्टल।
- किसानों को प्रजनकों के साथ जोड़ना।
- जर्मप्लाज्म की उपलब्धता के बारे में वास्तविक समय में प्रामाणिक सूचना।

पोर्टल का ब्यौरा

- किसानों को उन सभी स्रोतों के बारे में जानकारी देगा, जहां हिमीकृत वीर्य, भ्रूण तथा जीवित पशु, पशुधन प्रमाणन के साथ उपलब्ध हैं।
- किसानों को देश के 56 वीर्य केंद्रों (20 राज्यों), 4 सीएचआरएस (4 राज्य/तथा 7 सीसीबीएफ (6 राज्य) के साथ जोड़ेगा तथा "किसान से किसान तक" तथा "किसान से संस्थान तक" संपर्क स्थापित करेगा।

किसानों के लिए

- बोवाइन प्रजनकों, विक्रेताओं तथा खरीददारों के लिए वन स्टाप पोर्टल।
- ज्ञात आनुवांशिक गुणता के साथ रोगमुक्त जर्मप्लाज्म की उपलब्धता।
- बिचौलिए की भागीदारी को कम से कम करना।
- नकुल स्वास्थ्य पत्र से केवल टैग किए गए पशुओं की बिक्री।
- देश में विविध देशी बोवाइन नस्लों का संरक्षण।
- किसानों की आय में वृद्धि।
- वेब पोर्टल को खोलने पर किसान जीवित पशु, वीर्य तथा भ्रूण के विकल्प को चुन सकता है। ब्यौरे की तुलना कर सकता है, पूरी सूचना दे सकता है तथा अपने स्थान पर पशु की डिलीवरी लेने के लिए ऑनलाइन कीमत अदा कर सकता है। ■

'दुग्ध सरिता' के सदस्य बनें
घर बैठे पत्रिका पाएं

इंडियन डेरी एसोसिएशन
का प्रकाशन

दुग्ध सरिता
(द्विमासिक पत्रिका)
अंकों की संख्या : 6
वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 450/–
कीमत रु. 75/– प्रति अंक
साधारण डाक से निःशुल्क डिलीवरी, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक का शुल्क रु. 40/– प्रति अंक

दुग्ध सरिता : देश में डेरी सेक्टर का विकास आईडीए का मिशन है और इसके लिए हिंदी भाषा में डेरी किसानों को लक्ष्य करते हुए इस द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है। यह पत्रिका डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों की एक बड़ी मांग और जरूरत पूरी करती है। 'दुग्ध सरिता' डेरी किसानों की समस्याओं और मुद्दों पर केंद्रित है और संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान करती है।

'दुग्ध सरिता' की 4,000 या अधिक प्रतियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसे सहकारी समितियों और निजी डेरी सेक्टर के संस्थागत सदस्यों सहित आईडीए के सभी सदस्यों, शैक्षणिक संस्थानों और सभी संबंधित सरकारी विभागों को प्रेषित किया जा रहा है। इसके माध्यम से नई तकनीकों, सर्वोत्तम दूध प्रक्रियाओं, डेरी प्रसंस्करण और आधिक दूध उत्पादन सहित सभी पहलुओं पर जानकारी प्रदान की जा रही है। 'दुग्ध सरिता' में लेख, समाचार व विचार, केस स्टडीज, सफलता गाथाएं, फोटो फीचर तथा अन्य उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाएगी। इसका उद्देश्य डेरी पशुओं के पालन से लेकर दूध उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण तथा बिक्री के सभी आयामों को शामिल करते हुए डेरी किसानों और डेरी व्यवसाय को प्रगति तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है।

आईडीए द्वारा 'इंडियन डेरीमैन' और 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' नामक दो अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है, जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं।

सदस्यता फार्म

हाँ, मैं सदस्य बनना चाहता हूं :
दुग्ध सरिता विवरण...../एक वर्ष/दो वर्ष/ तीन वर्ष/ प्रतियों की संख्या
(कृपया 'टिक' करें)

पत्रिका भेजने का पता (अंग्रेजी में लिखें तो कैपिटल लैटर प्रयोग करें)
संस्थान / व्यक्ति का नाम.....
संपर्क व्यक्ति का नाम व पदनाम (संस्थान सदस्यता के लिए).....
पता.....
शहर.....
राज्य.....पिन कोड.....ई–मेल.....
फोन.....मोबाइल.....
संलग्न बैंक ड्राफ्ट/स्थानीय चेक (ऐट पार) नं.....
बैंक.....इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली को देय
एनईएफटी विवरण (ट्रांसैक्शन आईडी.....तारीख.....राशि.....)

(हस्ताक्षर)

कृपया इस फॉर्म को भरकर डाक से भेजें या ई–मेल करें।
सेक्रेटरी (ऐस्टेबलिशमेंट), इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सेक्टर–IV आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022
फोन : 26179781, 26170781 ईमेल : **dsarita.ida@gmail.com** वेबसाइट : **www.indairyasso.org**

एनईएफटी विवरण : खाता नाम : इंडियन डेरी एसोसिएशन बचत खाता संख्या : 90562170000024 आईएफएससी : **SYNB0009009**
बैंक : सिंडिकेट बैंक ; शाखा; दिल्ली तमिल संगम बिल्डिंग, सेक्टर V आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

प्रश्नोत्तरी

दुधारू पशुओं में ब्रुसेलोसिसः रोकथाम एवं उपचार

मनोज कुमार
सहायक प्राध्यापक
पशुचिकित्सा सूक्ष्म विज्ञान विभाग
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

ब्रुसेलोसिस एक महत्वपूर्ण संक्रामक रोग है जो बैक्टीरिया (जीवाणु) के कारण होता है और आर्थिक क्षति करता है। इससे पशु तथा मनुष्य दोनों संक्रमित होते हैं । सामान्यतः यह रोग गाय, भैंस, भेड़, बकरी, सूअर, घोड़ों, कुत्तों और कुछ अन्य पशुओं को प्रभावित करता है, जिनमें मुख्य रूप से मवेशी और जंगली जानवर संवेदनशील प्रजातियां हैं। इस रोग को "संक्रामक गर्भपात" या "बैंग रोग" के रूप में भी जाना जाता है। ब्रुसेलोसिस एक जूनोटिक रोग है, जिसका अर्थ यह जानवरों से मनुष्यों तक फैल सकता है। मनुष्यों में यह "असंतुलन ज्वर" के नाम से प्रचलित है।

ब्रुसेलोसिस पशुधन की एक गंभीर बीमारी है, जिसमें आर्थिक दृष्टि से पशु स्वास्थ्य और पशुपालक स्वास्थ्य महत्वपूर्ण हैं। पशुओं में संक्रमण से अनेकों क्षतियां होती हैं जिनमें दूध उत्पादन में कमी, वजन का घटना, बछड़ों की हानि, गर्भपात, बांझपन और लंगड़ापन महत्वपूर्ण हैं। कभी–कभी गर्भपात नहीं भी हो सकता है परन्तु संक्रमित पशुओं से जन्मे बछड़े कमजोर होते हैं। संक्रमित गायों में एक ही बार गर्भपात होता है, लेकिन बाद के गर्भधारण से पैदा होने वाले बछड़े कमजोर और अस्वस्थ जन्म सकते हैं। कुछ संक्रमित गायों में अव्यक्त संक्रमण मौजूद हो सकते हैं जिनसे उनमें गर्भपात होने की संभावना रहती है। ऐसी गायों से जनित बछड़े भले ही स्वस्थ दिखाई दे सकते हैं लेकिन वे रोग के खतरनाक स्रोत माने जाते हैं। ब्रुसेलोसिस से गर्भ धारण दर के साथ प्रजनन क्षमता का स्पष्ट रूप से कम होना शामिल है। ब्रुसेलोसिस के जीवाणु गर्भपात भ्रूण में आठ महीने तक, गोबर में तीन से चार महीने तक, और गीली मिट्टी में दो से तीन महीने तक जीवित रह सकता है। प्रत्यक्ष सूर्य के प्रकाश में ब्रुसेला बैक्टीरिया कुछ घंटों के भीतर नष्ट हो जाते हैं।

तथ्य यह भी है कि यह रोग तेजी से फैल सकता है और संपर्क में आये पशु एवं मनुष्य इसकी चपेट में आ सकते हैं जिससे यह अधिक गंभीर हो जाता है।

ब्रुसेलोसिस का आर्थिक महत्व क्या है?

यह रोग आर्थिक नुकसान के लिए जिम्मेदार होता है जिसमें गर्भपात के कारण दुग्ध उत्पादकता में कमी, बाँझपन के परिणामस्वरूप बछड़ा उत्पन्नता में दीर्घ अन्तराल, स्थायी रूप से बांझपन एवं गर्भाशय की सूजन से मृत्यु प्रमुख हैं।

एक अनुमान के अनुसार भारत में ब्रुसेलोसिस से प्रतिवर्ष लगभग 22,000 करोड़ रूपये का नुकसान होता है।

रोग के मुख्य कारण क्या हैं?

ब्रुसेलोसिस एक अत्यंत संक्रामक रोग है जो ब्रुसेला बैक्टीरिया (जीवाणु) से संक्रमित पशुओं के संपर्क में आने होता है। पहले से संक्रमित पशु रोग के महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं। गर्भपात से उत्पन्न भ्रूण या बछड़ों, प्लेसेंटा (झिल्ली) और गर्भाशय से स्रवित द्रव, सभी में बैक्टीरिया की बड़ी मात्रा होती है जिससे मवेशियों में संक्रमण बहुत आसानी से फैलता है। रोगग्रस्त पशुओं के द्वारा बैक्टीरिया दूध एवं प्रजनन पथ से स्रवित होता रहता है, जिसके संपर्क में आने से भी रोग लग सकता है।

ब्रुसेलोसिस के लक्षण क्या हैं?

आमतौर पर गर्भवती पशुओं के पांचवें और सातवें महीने की गर्भावस्था के बीच में गर्भपात या कमजोर बछड़ों के जन्म ब्रुसेलोसिस के संभावित संकेत हैं। गर्भपात की वजह से होने वाली देरी और विलंबित अवधारणाओं के कारण सामान्य दूध पिलाने की अवधि में दूध का उत्पादन घट सकता है। सभी संक्रमित गायों को रोकना नहीं है, लेकिन इनमें आमतौर पर गर्भावस्था के पांचवें से सातवें महीने के बीच में गर्भपात होते हैं। संक्रमित गायों में एक ही बार गर्भपात होता है, लेकिन बाद के गर्भधारण से पैदा होने वाले बछड़े कमजोर और अस्वस्थ जन्म सकते हैं। कुछ संक्रमित गायों में अव्यक्त संक्रमण हो सकते हैं जो गर्भवती हो जाते हैं, उनमें गर्भपात होने की संभावना रहती है। ऐसी गायों से जनित बछड़े भले ही स्वस्थ दिखाई दे सकते हैं, लेकिन वे रोग के खतरनाक स्रोत माने जाते हैं। ब्रुसेलोसिस के अन्य लक्षणों में गर्भ धारण दर के साथ प्रजनन क्षमता का स्पष्ट रूप से कम होना शामिल है ।

मवेशियों में ब्रुसेलोसिस के कुछ प्रमुख लक्षण निम्न प्रकार के होते हैं:

- पांचवें और सातवें महीने की गर्भावस्था के बीच में गर्भपात।
- मृत या कमजोर बछड़े का जन्म और जन्म के तुरंत बाद मृत्यु।
- भ्रूण झिल्ली का प्रतिधारण
- झिल्ली में संक्रमण के लक्षण
- बैल में अंडकोष का सूजन
- बछड़ों में अंडकोष का संक्रमण
- बैलों के अंडकोष का संक्रमण
- गायों के घुटनों पर बड़े सूजन (हाईग्रोमा) का विकसित होना

ब्रुसेलोसिस कैसे फैलता है?

पशुओं में ब्रुसेला आमतौर पर संक्रमित ऊत्तक और तरल पदार्थ (जैसे, नाल, गर्भपात भ्रूण, गर्भद्रव,) के संपर्क से फैलता है। बैक्टीरिया संक्रमित पशुओं के दूध, रक्त, मूत्र और वीर्य में भी पाया जा सकता है। संक्रमित जानवरों के गर्भपात किए जाने के बाद उपस्थित भ्रूण, झिल्ली या तरल पदार्थ और अन्य योनिस्राव, सभी ब्रुसेला जीवाणु से दूषित होते हैं। मवेशी उन सामग्रियों या उनसे दूषित चारा या पानी ग्रहण करने से संक्रमित होते हैं। पशुओं के मुख, श्लेष्म झिल्ली (आँखें, नाक, मुंह) या त्वचा में कटे स्थान के सीधे संपर्क से जीवाणु शरीर में प्रवेश करते हैं। खुले हुए घुमंतू पशुओं द्वारा भी ब्रुसेलोसिस एक झुंड से दूसरे तक फैल जाता है। संक्रमित बैल संक्रमित वीर्य द्वारा सेवा के समय रोग का गायों को संचार कर सकते हैं।

ब्रुसेलोसिस का निदान कैसे किया जाता है?

ब्रुसेला का सटीक निदान पशुओं में रोग के नियंत्रण के लिए महत्वपूर्ण है। नैदानिक निदान पशुधन में प्रजनन विफलताओं के इतिहास पर आधारित होता है, लेकिन यह एक संभावित निदान है जिसे प्रयोगशाला के तरीकों से पुष्टि करनी होगी। ब्रुसेलोसिस के निदान के लिए पशुओं के रक्त या अस्थि मज्जा नमूनों से बैक्टीरिया का संवर्धन एक 'मानक' विधि है। इसके अतिरिक्त सर्जिकल टेस्ट जैसे, रोज बंगाल प्लेट टेस्ट (आरबीपीटी), पूरक निर्धारण

आवश्यक है ब्रुसेलोसिस की रोकथाम

परीक्षण (सीएफटी), दुग्ध वलय परीक्षण और एंजाइम से जुड़े एलिसा का प्रयोग भी किया जाता है जिसे पशुपालक अपने फार्म पर भी कर सकते हैं । वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में उन्नत आणविक विधियों का भी प्रयोग किया जाता है जो पोलीमरेज चेन रिएक्शन (पीसीआर) आधारित ब्रुसेलोसिस के निदान के लिए मानक सूक्ष्मजीवविज्ञानी परख के संबंध में उच्च संवेदनशीलता होती है।

ब्रुसेलोसिस के रोकथाम और नियंत्रण के लिए क्या करें?

ब्रुसेलोसिस से बचाव हेतु मुख्य रूप से निम्न प्रभावकारी उपाय किये जा सकते हैं:

- पशु प्रक्षेत्रों में सार्थक जैव–सुरक्षा
- संवेदनशील पशुओं का टीकाकरण

इन दोनों उपायों का साथ–साथ अनुसरण करने से सार्थक परिणाम होंगे। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य बातों का ध्यान रखना उचित होगा जैसे:

- जानवरों को खरीदते समय सावधानीपूर्वक चयन करें।
- ऐसे पशुओं को खरीदें जो ब्रुसेला मुक्त हों, इसके लिए पूर्व में टीकाकृत एवं परीक्षित पशुओं को चुनें।
- अपने पशुओं की नियमित सीरोलॉजिकल जाँच कराएँ
- यदि संभव हो तो गर्भपात या समय से पहले जन्म या अन्य नैदानिक लक्षणों का कारण निदान करने के लिए प्रयोगशाला सहायता का उपयोग किया जाना चाहिए।
- जब तक निदान नहीं किया जा सकता, तब तक संदिग्ध पशुओं को अलग रखना चाहिए।
- पशुओं को निगरानी उपायों में शामिल किया जाना चाहिए जैसे कि मवेशियों में आवधिक दूध का परीक्षण (प्रति वर्ष कम से कम चार बार) और उनके सीरम की नियमित सीरोलॉजिकल जाँच ।
- नाल को उचित रूप से मिट्टी में दबाना।
- दूषित क्षेत्रों को कीटाणुनाशक से अच्छी तरह साफ किया जाना चाहिए।

टीकाकरण

ब्रुसेलोसिस के लिए कोई शर्तिया इलाज नहीं है रोकथाम ही एक कारगर उपाय है। इसके रोकथाम बछड़ों के टीकाकरण द्वारा की जाती है। टीकाकरण पशु ब्रुसेलोसिस के नियंत्रण का एक मात्र व्यावहारिक और आर्थिक साधन है। पशुओं में ब्रुसेलोसिस की रोकथाम और नियंत्रण के लिए सबसे सफल तरीका टीकाकरण ही है। बछड़े में चार से आठ महीने की आयु में टीकाकरण करना चाहिए।

भारत सरकार द्वारा "ब्रुसेला नियंत्रण कार्यक्रम" चलाया जा रहा है, जिसमें 4–8 माह के बछड़ों का टीकाकरण करने का प्रावधान है। ■

सफलता गाथा

डेरी प्रसंस्करण ने संवारा बलदेव सिंह का जीवन

गोपिका तलवार, रेखा चावला, संतोष कुमार मिश्रा एवं अनिल कुमार पुनिया

डेरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय

गुरू अंगद देव पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय,

लुधियाना – 141004

अमृतसर के एक गांव मेहरबानपुर में श्री एस. बलदेव सिंह का जन्म 10 अक्टूबर, 1985 में हुआ था। गांव में प्राथमिक शिक्षा के बाद आर्थिक समस्याओं के कारण वे ग्यारहवीं के बाद पढ़ाई जारी नहीं रख सके। आजीविका के लिए उन्होंने एक स्कूल में चपरासी की नौकरी की। स्कूल के शिक्षकों के प्रोत्साहन और मार्गदर्शन से उन्होंने अपनी बारहवीं की पढ़ाई पूरी की और कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर में डिप्लोमा प्राप्त किया। इसी बीच उन्होंने कुछ महीनों के लिए वीडियो फोटोग्राफर का भी काम किया। इस काम से वह जरूरत भर की कमाई नहीं कर पा रहे थे। तभी उन्होंने अपनी रुचि के अनुरूप डेरी प्रसंस्करण क्षेत्र में नौकरी ढूंढ ली। श्री सिंह जंडियाला स्थित एक डेरी प्रसंस्करण इकाई में मात्र 3500 रुपये प्रति माह के वेतन पर कार्य करने लगे। नौकरी के दौरान उन्होंने दुग्ध उत्पादों व प्रसंस्करण आदि को पास से देखा और काफी प्रेरित हुए और अपनी स्वयं की इकाई स्थापित करने का निश्चय किया। इस प्रसंस्करण इकाई में कार्य करते हुए वह इतना अवश्य जान गए कि प्रौद्योगिकी के माध्यम से यह एक लाभकारी

अपनी प्रसंस्करण इकाई, अपनी कमाई

व्यवसाय है। अपनी नौकरी के दौरान उन्होंने दुग्ध उत्पाद बनाने से संबंधी प्रशिक्षण के बारे में सोचा ताकि अपने सपने को साकार किया जा सके। इस दिशा में कदम बढ़ाते हुए उन्होंने वर्का से संपर्क साधा जहां उन्हें डेरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कॉलेज, गुरू अंगद देव पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, लुधियाना से संबंधित प्रशिक्षण प्राप्त करने की सलाह दी गई।

वेबसाइट के माध्यम से उन्होंने विश्वविद्यालय से दही और पनीर के उत्पाद पर विशेष प्रशिक्षण कोर्स करने के लिए आवेदन किया। किसान की दिलचस्पी को देखते हुए डेरी और प्रौद्योगिकी महाविद्यालय ने उन्हें व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए एक विशेष कोर्स बनाया और उन्हें वहां बुलाया। इस प्रकार उन्होंने कॉलेज के निष्ठावान फैकल्टी सदस्यों द्वारा दही और पनीर निर्माण पर व्यावहारिक और सैद्धांतिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद श्री सिंह ने अपने गांव में ही 20 लीटर प्रति दिन दूध क्षमता के साथ अपना स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ किया। वह पड़ोस के गांवों के पशुपालकों से दूध खरीदकर दही और पनीर बनाने के साथ–साथ ठंडा दूध बेचने लगे। व्यवसाय प्रारंभ के दो सप्ताह तक उन्हें उपभोक्ताओं से मिली–जुली प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुईं। ग्राहक बढ़ाने के लिए उन्हें बेहतर मार्केटिंग की आवश्यकता समझ में आने लगी। उपाय के तौर पर उन्होंने अपने इन उत्पादों का गुरूद्वारे में घोषणा के जरिए प्रचार करवाया। इसके परिणामस्वरूप ग्राहकों की संख्या में बढ़ोतरी हुई तथा कारोबार बढ़ने लगा। केवल दो ही दुग्ध उत्पाद बेचकर श्री सिंह संतुष्ट नहीं थे, इसलिए उन्होंने अपना कौशल बढ़ाने के लिए एक बार फिर "दूध का मूल्य वर्धन" प्रशिक्षण कार्यक्रम में पांच दिनों का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

अप्रैल, 2017 में उन्होंने अपने व्यवसाय में मक्खन और लस्सी को भी शामिल कर लिया तथा दूध खरीद क्षमता को 20 से 150 लीटर प्रतिदिन तक पहुंचा दिया। वर्तमान में उनके पास विभिन्न आवश्यकताओं के लिए विशेष मशीनें जैसे, 300 लीटर क्षमता वाली चिलर, क्रीम सेपरेटर, एलपीजी चालित ओपन पैन तथा वसा मापक मशीनें उपलब्ध हैं। व्यवसाय विकसित हुआ और उनके माता–पिता भी इस उद्यम में उनका सहयोग करने लगे। वर्तमान में उनकी मासिक आय 15,000 रुपये है। बाजार मांग को देखते हुए वह जल्दी ही व्हे ड्रिंक्स और मोजरेला चीज को भी अपने व्यवसाय में शामिल करना चाहते हैं और

कार्यशाला के लिए अन्य आवश्यक मशीनों को भी खरीदना चाहते हैं।

कम समय में ही उन्होंने स्वच्छ दुग्ध उत्पादों के व्यवसाय से आसपास के गांवों में प्रतिष्ठा अर्जित करने के साथ ही अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर ली है। सफल उद्यमी के तौर पर वह अपने क्षेत्र में एक आदर्श और रोल मॉडल की तरह देखे जाते हैं। उनकी यह सफलता ग्रामीण युवाओं के लिए एक उदाहरण है कि किस प्रकार से एक युवा आजीविका अर्जन के संघर्ष की स्थिति से उबरकर दूसरे युवाओं को रोजगार दे सकता है।

(हिन्दी प्रस्तुतिः विश्वनाथ सिंह)

नये उपकरणों में निवेश

'दुग्ध सरिता' का अभियान, संपन्न बनें डेरी किसान

लेखकों से निवेदन

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा लोकप्रिय द्विमासिक पत्रिका 'दुग्ध सरिता' के प्रकाशन का शुभारंभ एक अभियान के रूप में किया गया है। इसका उद्देश्य नयी जानकारियों और उपयोगी सूचनाओं को डेरी किसानों, डेरी उद्यमियों तथा डेरी व्यवसायियों तक पहुंचाकर उनकी सकल आमदनी को बढ़ाना तथा डेरी सैक्टर का विकास करना है।

यदि आप डेरी वैज्ञानिक, डेरी किसान, डेरी उद्यमी, डेरी सहकारिता या डेरी सैक्टर से जुड़े हैं तो हमारा अनुरोध है कि 'दुग्ध सरिता' में अपना लेखकीय योगदान देकर हमारे अभियान में भागीदार बनें और उसे सफल बनाएं।

आप हमें जानकारीपूर्ण सचित्र लेख, अपने सकारात्मक अनुभव, सफलता की कहानियां, केस स्टडीज़ तथा अन्य उपयोगी जानकारी प्रकाशन के लिए भेज सकते हैं। बस गुजारिश सिर्फ इतनी है कि यह सामग्री सरल और सहज भाषा में तथा हमारे लक्ष्य वर्ग के लिए उपयोगी हो। हम अधिकतम 2,000 शब्दों तक की रचनाओं का स्वागत करते हैं और 500 शब्दों से कम के आलेखों को संक्षिप्त रूप में प्रकाशित करने की व्यवस्था है। आपके द्वारा भेजे गये आलेखों को तकनीकी मूल्यांकन के उपरांत प्रकाशित किया जाएगा और इस संबंध में संपादक मंडल का निर्णय अंतिम तथा अनिवार्य रूप से मान्य होगा। हमारे लिए आपका योगदान अमूल्य है, परंतु प्रकाशित रचनाओं पर एक सांकेतिक धनराशि मानदेय के रूप में प्रदान की जाती है। आपकी रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

- *कृपया अपनी रचनाएं कृतिदेव 016 फोंट में ई–मेल करें। हमारा ई–मेल पता है : dsarita.ida@gmail.com*
- *रचनाओं के साथ बेहतर गुणवत्ता के और सार्थक चित्रों को कैप्शन के साथ .jpg फार्मेट में भेजें।*
- *अपना एक पासपोर्ट साइज फोटो भी संलग्न करें।*

दुग्ध सरिता में विज्ञापन दें, लाभ बढ़ाए

RATE CARD — DUGDH SARITA

Position	Rate per insertion Rs.	Inaugural Offer Rs.
Back Cover (Four Colours)*	18,000	12,000
Inside Front Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Back Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Right Page (Four Colours)	10,800	7,000
Inside Left Page (Four Colours)	9,600	6,000
Facing Spread (Four Colours)	16,800	11,000
Half Page (Four Colours)	5400	4000

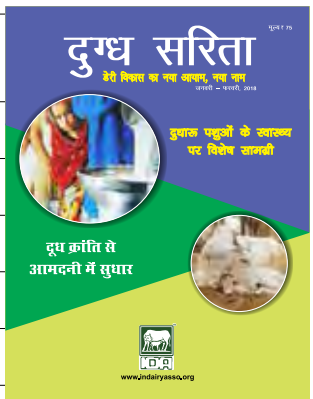

* Fifth colour: extra charges will be levied.

TECHNICAL DETAILS

Magazine Size in cm — **Height :** 26.5 cm; **Width:** 20.5 cm

Please leave 1 cm space from all side i.e. top-bottom-left and right. For bleed size artwork, please provide 1 cm bleed from all side over and above given size of the magazine.

Terms and Conditions

- Indian Dairy Association reserves the exclusive right to reject any advertisement, whether or not the same has already been acknowledged and/or previously published.
- The advertisement material should reach the IDA House on or before the informed deadline date.
- Cancellation of advertisements is not accepted after the booking deadline has expired.
- The Association will not be liable for any error in the advertisement.
- The Association reserves the right to destroy all material after a period of 45 days from the date of issue of the last advertisement.

Artwork

The ad material may be sent through email on the ID: **ida.adv@gmail.com** in PDF & JPG **OR** CDR & JPG format only. All four colour scan should be saved as CMYK not RGB. Processing charges would be borne by the advertiser as per actuals.

Mode of Payment

100% Advance. Payment should be made through Bank Draft payable at New Delhi / Cheque payable at par / NEFT in favour of the "Indian Dairy Association" along with the Release Order. Bank details are as follows: ***Name:*** *Indian Dairy Association;* ***SB a/c No:*** *90562170000024;* ***IFSC:*** *SYNB0009009;* ***Bank:*** *Syndicate Bank;* ***Branch Address:*** *Delhi Tamil Sangam Building, Sector – V, R.K. Puram New Delhi.*

Contact for Ads

Mr. Narendra Kumar Pandey

Executive-Publications. Ph. (Direct): 011-26179783 M.: 9891147083

Indian Dairy Association

IDA House, Sector-IV, R.K. Puram, New Delhi-110 022

Ph.: 91-11-26165355, 26170781, 26165237 Fax: 91-11-26174719

E-mail: ida.adv@gmail.com Web: www.indairyasso.org

चर्मिल प्लस

विभिन्न चर्म रोगों के लिए

AYURVET™

विभिन्न चर्म संबंधित समस्याओं के लिए

◆ खुरपका मुँहपका के घाव ◆ खाज खुज़ली ◆ मवाद युक्त घाव ◆ गहरे घाव

विशेषतायें :

- घावों पर मक्खियों को बैठने नहीं देता हैं
- गर्मियों में पिघलता नहीं और सर्दियों में जमता नहीं हैं
- जैल रूप में होने के कारण अच्छे से फैलता है एवं गहराई तक जाता हैं
- सभी प्रकार के चर्म रोगों पर असरदार है

उपयोग विधि :

पशु के प्रभावित भाग को अच्छे से साफ कर चर्मिल प्लस को दिन में दो बार लगाएं या चर्मिल स्प्रे को घाव सही होने तक स्प्रे करें।

स्प्रे के रूप में भी उपलब्ध है

पैकिंग: 25 ग्राम, 50 ग्राम एवं 1 किग्रा जैल, 100 मि.ली स्प्रे

AYURVET™ आयुर्वेट लिमिटेड

कॉरपोरेट कार्यालय: यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र.)
दूरभाष: +91-120-7100201 फैक्स: +91-120-7100202
ई-मेल: customercare@ayurvet.com वेब: www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587

रजिस्ट्रड ऑफिस: चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092

पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान

RNI No.: DELHIN/2017/74023

Amul
The Taste of India

अमूल दूध पीता है इंडिया

अमूल
दूध

एशिया का सबसे बड़ा मिल्क ब्रांड

खुला दूध गंदा और सेहत के लिए हानिकारक होता है. अमूल आपके लिए लाते हैं पाश्चराइज़्ड पाउच दूध.
यह शुद्ध और विटामिन्स से भरपूर होता है. इसे अत्याधुनिक मशीनों की मदद से पैक किया जाता है,
इसलिए यह इंसानी हाथों से अनछुआ रहता है. अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें 011-28524336/37.

Follow us: /amul.coop | /amul_coop | /amultv | /amul_india | Visit us at http://www.amul.com

10824579HIN

प्रकाशक व मुद्रक नरेश कुमार भनोट द्वारा, इंडियन डेयरी एसोसिएशन के लिए रॉयल आफसेट,
ए–89/1, फेज–1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित व इंडियन डेयरी एसोसिएशन,
आईडीए हाऊस, सेक्टर–4, आर. के. पुरम, नई दिल्ली – 110022 से प्रकाशित, सम्पादक – जगदीप सक्सेना